Kamal.Sandesh
kamalsandesh.org
KamalSandesh

कमल संदेश

वर्ष-20, अंक-20
16-31 अक्टूबर, 2025 (पाक्षिक)
₹20

भाजपा आगामी चुनावों में विजयी होकर 'विकसित केरलम' के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगी

आरएसएस की मूल भावना 'राष्ट्र प्रथम'

नई दिल्ली में 29 सितंबर, 2025 को नवनिर्मित भाजपा दिल्ली प्रदेश कार्यालय का उद्घाटन करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा तथा अन्य वरिष्ठ नेतागण

भाजपा मुख्यालय (नई दिल्ली) में 25 सितंबर, 2025 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा

भाजपा मुख्यालय (नई दिल्ली) में 25 सितंबर, 2025 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

भाजपा मुख्यालय (नई दिल्ली) में 25 सितंबर, 2025 को 'सेवा पखवाड़ा' के अंतर्गत पौधारोपण करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

भुज सैन्य स्टेशन (गुजरात) पर 02 अक्टूबर, 2025 को विजयदशमी के अवसर पर 'शस्त्र पूजा' करते रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सह संपादक
संजीव कुमार सिन्हा
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
भोला राय

डिजिटल मीडिया
राजीव कुमार
विपुल शर्मा

सदस्यता एवं वितरण
सतीश कुमार

इ-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com
फोन: 011-23381428, फैक्स: 011-23387887
वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 **एक शताब्दी पहले हुई आरएसएस की स्थापना राष्ट्रीय चेतना की स्थायी भावना दर्शाती है: नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक अक्टूबर को नई दिल्ली स्थित डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस)...

10 **आज पूरा देश एक 'विकसित भारत' के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है: नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत...

12 **भाजपा आगामी चुनावों में विजयी होकर 'विकसित केरलम' के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगी: जगत प्रकाश नड्डा**
भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री...

14 **भाजपा सत्ता के लिए नहीं, बल्कि सेवा के लिए सरकार में है : नरेन्द्र मोदी**
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली में 5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर नवनिर्मित दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय...

17 **यह चुनाव बिहार को प्रगति के रास्ते पर ले जाने का चुनाव है: अमित शाह**
केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह...

लेख

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष / **नरेन्द्र मोदी** 08
वीके मल्होत्रा जी को श्रद्धांजलि / **नरेन्द्र मोदी** 20
स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता से होगा भारत विकसित / **शिवप्रकाश** 22
स्वस्थ भारत की आशा के सात साल / **जगत प्रकाश नड्डा** 26
आरएसएस: सेवा, त्याग और राष्ट्र निर्माण की शताब्दी यात्रा / **राजनाथ सिंह** 28

अन्य

संगठनात्मक नियुक्तियां 13
बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में संपन्न होगा 15
दीनदयालजी का 'अंत्योदय' चिंतन हमें समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने की प्रेरणा देता रहेगा 16
रेल आधारित मोबाइल लांचर प्रणाली से मध्यम दूरी की अग्नि-प्राइम मिसाइल का सफल प्रक्षेपण 18
जहाज निर्माण और समुद्री क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए 69,725 करोड़ रुपये के पैकेज को मिली मंजूरी 18
वरिष्ठ भाजपा नेता विजय कुमार मल्होत्रा नहीं रहे 19
प्रधानमंत्री ने सरकार के प्रमुख के रूप में 25वें वर्ष में प्रवेश करने पर लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया 25
भारत 31 मार्च, 2026 तक नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा: अमित शाह 30
प्रधानमंत्री ने बिहार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना की शुरुआत की 32
'मन की बात' 33

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए विष्णु मित्तल द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)-201306 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। संपादक- डॉ. शिव शक्ति नाथ बक्सी

सोशल मीडिया से

नरेन्द्र मोदी

विकसित भारत के निर्माण में अहम भागीदारी निभा रहे अन्नदाताओं का कल्याण हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। इसी दिशा में रबी फसलों की एमएसपी बढ़ाने का फैसला लिया गया है। इससे जहां हमारी खाद्य सुरक्षा और मजबूत होगी, वहीं हमारे किसान भाई-बहनों को भी लाभ होगा।

(01 अक्टूबर, 2025)

जगत प्रकाश नड्डा

आज हम सभी के लिए बहुत ही खुशी का विषय है कि एक लंबे अंतराल और इंतजार के बाद दिल्ली प्रदेश के भाजपा का अपना कार्यालय बनकर आज सुसज्जित है और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर-कमलों द्वारा उसका श्री गणेश हुआ है।

(29 सितंबर, 2025)

अमित शाह

भारत के पास 140 करोड़ की आबादी का बड़ा मार्केट है और यह मार्केट तभी उपयोग में आ सकता है, जब देशवासी अपने परिवार में 'स्वदेशी' के उपयोग को बढ़ावा देंगे।

(05 अक्टूबर, 2025)

राजनाथ सिंह

2047 तक एक विकसित भारत के लक्ष्य के लिए यह आवश्यक है कि हम रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनें और एक प्रमुख वैश्विक निर्यातक के रूप में उभरें। साथ ही, अत्याधुनिक तकनीकी क्षेत्रों में विश्व का नेतृत्व भी करें।

(07 अक्टूबर, 2025)

बी.एल. संतोष

स्मारक सिक्का। भारत माता। गणवेश में स्वयंसेवक पर विशेष डाक टिकट। 1963 में गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेते हुए गणवेश में स्वयंसेवक। प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत कार्य में लगे स्वयंसेवक। #RSS100Years

(1 अक्टूबर, 2025)

नितिन गडकरी

हमारे पैरा-एथलीटों का अद्भुत कारनामा! #WorldParaAthleticsChampionships में भारत ने रिकॉर्ड 22 पदक जीते हैं, जिनमें से 6 स्वर्ण पदक हैं! हर पदक साहस, दृढ़ता और अदम्य साहस की कहानी है। आपने न केवल देश को गौरवान्वित किया है, बल्कि लाखों लोगों को अपनी असीम क्षमता पर विश्वास करने के लिए प्रेरित भी किया है। हमारे सभी चैंपियनों को हार्दिक बधाई!

(6 अक्टूबर, 2025)

कमल संदेश परिवार की ओर से
सुधी पाठकों को
दीपावली (20 अक्टूबर)
की हार्दिक शुभकामनाएं!

संपादकीय

'विकसित भारत' के विजन के आधारस्तंभ : स्वदेशी व आत्मनिर्भरता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (रा.स्व.संघ) ने 'मां भारती' की सेवा में अपनी सौ वर्षों की गौरवमयी यात्रा पूर्ण कर ली है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के यज्ञ में इसके अद्भुत योगदान की स्मृति में एक डाक टिकट एवं एक सिक्का जारी किया। आज रा.स्व.संघ व्यक्ति निर्माण के साथ-साथ निरंतर विकसित होते हुए विविध आयामों एवं विभिन्न क्षेत्रों में कार्यों के साथ एक अभिनव संगठन के रूप में उभरा है। यह विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन बन गया है जो केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी अपनी अनूठी पहचान बना चुका है। स्मृति में डाक टिकट एवं सिक्का जारी करने के अवसर पर प्रधानमंत्री जी ने कहा कि रा.स्व.संघ का आदर्श भारतीय संस्कृति की जड़ों को गहरा एवं सुदृढ़ करना है तथा साथ ही इसने समाज में आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान का भाव भरते हुए हर हृदय में जनसेवा की ज्योति जलाए रखा है। उन्होंने कहा कि इसकी दृष्टि भारतीय समाज को सामाजिक न्याय का प्रतीक बनाना है, इसका मिशन भारत की आवाज को वैश्विक मंचों पर बुलंद करना है। इसका संकल्प राष्ट्र का सुरक्षित एवं उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करना है। रा.स्व.संघ को निःस्वार्थ सेवा, गरीब से गरीब के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता, हर क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सतत कार्य तथा समाज में एकता एवं एकात्मता का भाव भरने के लिए जाना जाता है। इसने कोटि-कोटि जन को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की नींव को सुदृढ़ कर राष्ट्रसेवा के लिए प्रतिबद्ध रहने के लिए प्रेरित किया है।

स्वदेशी के सिद्धांतों के आधार पर 'हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी' का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आह्वान आज देश के कोने-कोने में गूंज रहा है। 'आत्मनिर्भरता' के मंत्र से देश में आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं स्व-जागरण का नया युग शुरू हुआ है

स्वदेशी के सिद्धांतों के आधार पर 'हर घर स्वदेशी, घर-घर स्वदेशी' का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का आह्वान आज देश के कोने-कोने में गूंज रहा है। 'आत्मनिर्भरता' के मंत्र से देश में आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं स्व-जागरण का नया युग शुरू हुआ है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में रचा-बसा स्वदेशी का आदर्श पिछले ग्यारह वर्षों में आर्थिक सुदृढ़ीकरण एवं वैश्विक स्पर्धा में एक समग्र रणनीति के रूप में विकसित हुआ है। स्वदेशी के उच्च आदर्शों से प्रेरित 'आत्मनिर्भर भारत' की पहल आज विनिर्माण, कृषि, रक्षा, ऊर्जा, डिजिटल अवसंरचना, आयात पर निर्भरता कम करना एवं देशी नवाचार के क्षेत्र को गति दे रही है। प्रधानमंत्री जी का 'वोकल फॉर लोकल' का आह्वान जिससे लोग भारत में बने उत्पाद, जिनसे भारत की मिट्टी की सुगंध आती है, अब खरीद रहे हैं तथा उपयोग में ला रहे हैं। इससे 'आत्मनिर्भर भारत' की दृष्टि को बल मिला है और 'विकसित भारत' का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 मई, 2020 को शुभारंभ किया गया 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' स्वदेशी के सिद्धांतों पर आधारित इसका अधुनिक स्वरूप है जो भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में विकसित करते हुए इसकी रणनीतिक स्वायत्तता भी अक्षुण्ण रखता है। इस अभियान के अंतर्गत शुरू हुए अनेक पहल के परिणाम अब सामने आ रहे हैं तथा इनसे स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता, जिसे लोग पुरानी बातें कहने लगे थे, इनका महत्व अब स्वीकारने लगे हैं। कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान स्वदेशी की शक्ति को पूरी दुनिया ने देखा, जब भारत न केवल टीके एवं पीपीई किट बनाने में सफल हुआ बल्कि कई देश, जो महामारी से संकटग्रस्त थे, उन्हें भी सहायता कर उबारने में सफल हुआ। जहां पहले स्वदेशी का अर्थ केवल खादी एवं दीया था, आज देश में बने हवाई जहाज तेजस, ब्रह्मोस मिसाईल, टैंक, अत्याधुनिक हथियार एवं ड्रोन्स ने स्वदेशी का अर्थ बदल दिया है। स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के मंत्र ने पूरे देश में एक नया आत्मविश्वास भर दिया है जिससे अनगिनत नए अवसरों का निर्माण हुआ है तथा चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान प्राप्त किया जा रहा है।

आज जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शासन के प्रमुख के रूप में जनसेवा के पच्चीसवें वर्ष में प्रवेश किया है जन-जन का उनके प्रति दिनोदिन बढ़ता प्यार एवं समर्थन से उनका नेतृत्व और अधिक सुदृढ़ एवं ऊर्जावान बन रहा है। जहां उनके अथक परिश्रम से देशवासियों के जीवन में गुणात्मक सुधार हुए हैं, वहीं 'विकसित भारत' एवं 'आत्मनिर्भरता' की उनकी दृष्टि से देश का मार्ग उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रशस्त हो रहा है। उनके दूरदर्शी एवं करिश्माई नेतृत्व में भारत एक मजबूत एवं सशक्त राष्ट्र के रूप में उभरा है। ■

shivshaktibakshi@kamalsandesh.org

एक शताब्दी पहले हुई आरएसएस की स्थापना राष्ट्रीय चेतना की स्थायी भावना दर्शाती है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के प्रति आरएसएस के योगदान को रेखांकित करते हुए विशेष रूप से डिजाइन किया गया स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक अक्टूबर को नई दिल्ली स्थित डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के शताब्दी समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित किया। श्री मोदी ने इस अवसर पर सभी नागरिकों को नवरात्रि की शुभकामनाएं दीं और कहा कि आज महानवमी और देवी सिद्धिदात्री का दिन है। उन्होंने कहा कि कल विजयदशमी का महापर्व है, जो भारतीय संस्कृति के शाश्वत उद्घोष, अन्याय पर न्याय, असत्य पर सत्य और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि ऐसे ही पावन अवसर पर 100 वर्ष पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी और कहा कि यह कोई संयोग नहीं है। उन्होंने कहा कि यह हजारों वर्षों से चली आ रही एक प्राचीन परंपरा का पुनरुद्धार है, जिसमें राष्ट्रीय चेतना प्रत्येक युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए नए रूपों में प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि इस युग में संघ उस शाश्वत राष्ट्रीय चेतना का एक सद्गुणी अवतार है

"राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष का साक्षी बनना वर्तमान पीढ़ी के स्वयंसेवकों के लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने राष्ट्रसेवा के संकल्प में समर्पित असंख्य स्वयंसेवकों को अपनी शुभकामनाएं भी दीं। प्रधानमंत्री ने संघ के संस्थापक और पूज्यनीय आदर्श डॉ. हेडगेवार के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने घोषणा की कि संघ की गौरवशाली 100 वर्ष की यात्रा के उपलक्ष्य में भारत सरकार ने एक विशेष डाक टिकट और स्मारक सिक्का जारी किया है। 100 रुपये के इस सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न तो दूसरी तरफ सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि अंकित है, जिन्हें स्वयंसेवकों द्वारा नमन किया जा रहा है। श्री मोदी ने रेखांकित किया कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में संभवतः यह पहली बार है, जब भारत माता की छवि भारतीय मुद्रा पर दिखाई दी है। उन्होंने कहा कि सिक्के पर संघ का मार्गदर्शक आदर्श वाक्य— "राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदं न मम" भी अंकित है।

आज जारी किए गए स्मारक डाक टिकट के महत्व और इसकी असीम ऐतिहासिक प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए श्री मोदी ने 26 जनवरी के गणतंत्र दिवस परेड के महत्व को याद किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि 1963 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

स्वयंसेवकों ने देशभक्ति की धुनों पर ताल से ताल मिलाते हुए बड़े गर्व के साथ परेड में भाग लिया था। उन्होंने कहा कि यह डाक टिकट उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति को समेटे हुए है।

श्री मोदी ने इन स्मारक सिक्कों और डाक टिकट के जारी होने पर देशवासियों को हार्दिक बधाई देते हुए कहा, "यह स्मारक डाक टिकट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों के अटूट समर्पण को भी दर्शाता है, जो राष्ट्र की सेवा और समाज को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि जिस प्रकार महान नदियां अपने तटों पर मानव सभ्यताओं का पोषण करती हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी असंख्य लोगों को पोषित और समृद्ध किया है। एक नदी जो अपनी निकटस्थ भूमि, गांवों और क्षेत्रों को पल्लवित और पोषित करते हुए बहती है और संघ, जिसने भारतीय समाज के हर कार्यक्षेत्र और राष्ट्र के हर क्षेत्र को छुआ है, के बीच तुलना करते हुए, श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि यह निरंतर समर्पण और एक शक्तिशाली राष्ट्रीय धारा का परिणाम है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का महान उद्देश्य: राष्ट्र निर्माण

श्री मोदी ने कहा, "अपनी स्थापना के समय से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने महान उद्देश्य— राष्ट्र निर्माण को अपनाया है।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने राष्ट्रीय विकास की नींव के रूप में वैयक्तिक विकास का मार्ग चुना है। इस मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने के लिए संघ ने एक अनुशासित कार्य पद्धति— शाखाओं का दैनिक और नियमित संचालन अपनाई है।

प्रधानमंत्री ने कहा, "पूज्य डॉ. हेडगेवार समझते थे कि राष्ट्र तभी वास्तविक रूप से सशक्त होगा जब प्रत्येक नागरिक अपने दायित्व के प्रति जागरूक होगा; भारत तभी उन्नति करेगा जब प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के लिए जीना सीखेगा।" उन्होंने कहा कि इसीलिए डॉ. हेडगेवार अद्वितीय दृष्टिकोण अपनाते हुए लोगों के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं में वैयक्तिक विकास की महान प्रक्रिया के निरंतर फलने-फूलने पर प्रकाश डालते हुए श्री मोदी ने शाखा स्थल को प्रेरणा का एक पवित्र स्थल बताया, जहां एक स्वयंसेवक सामूहिक भावना का प्रतिनिधित्व करते हुए 'मैं' से 'हम' की ओर अपनी यात्रा आरंभ करता है। उन्होंने कहा कि ये शाखाएं चरित्र निर्माण की यज्ञ वेदी हैं, जो शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देती हैं। श्री मोदी ने यह भी कहा कि शाखाओं के भीतर, राष्ट्र सेवा की भावना और साहस की जड़ें पनपती हैं, त्याग और समर्पण स्वाभाविक हो जाते हैं, व्यक्तिगत श्रेय की लालसा कम हो जाती है और स्वयंसेवक सामूहिक निर्णय लेने और टीमवर्क के मूल्यों को आत्मसात् कर लेते हैं।

इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को राष्ट्रसेवा की अपनी यात्रा में अनेक आक्रमणों और षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा है, श्री मोदी ने स्मरण किया कि कैसे स्वतंत्रता के बाद भी संघ को दबाने और उसे मुख्यधारा में शामिल होने से रोकने के प्रयास किए गए। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि पूज्य गुरुजी को झूठे मामलों में फंसाकर जेल भेज दिया गया था। फिर भी रिहा होने पर गुरुजी ने अत्यंत धैर्य के साथ कहा, "कभी-कभी जीभ दांतों तले फंस जाती है और कुचल जाती है। लेकिन हम दांत नहीं तोड़ते, क्योंकि दांत और जीभ दोनों हमारी हैं।"

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कभी भी नहीं रखी 'कटुता'

श्री मोदी ने इस बात पर बल दिया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कभी भी कटुता नहीं रखी, इसका एक प्रमुख कारण लोकतंत्र और संवैधानिक संस्थाओं में प्रत्येक स्वयंसेवक की अटूट आस्था है। उन्होंने आपातकाल के दौरान स्वयंसेवकों को सशक्त और प्रतिरोध करने की शक्ति प्रदान करने का स्मरण किया। श्री मोदी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि समाज के साथ एकता और संवैधानिक संस्थाओं में आस्था, इन दो मूलभूत मूल्यों ने स्वयंसेवकों को हर संकट में धैर्यवान और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल देते हुए कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा में उसका एक सबसे महत्वपूर्ण योगदान समाज के विभिन्न वर्गों में आत्म-जागरूकता और गौरव का संचार करना रहा है, कहा कि संघ ने देश के सबसे दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में विशेष रूप से देश के लगभग दस करोड़ जनजातीय भाइयों और बहनों के बीच निरंतर कार्य किया है।

श्री मोदी ने कहा, "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सामाजिक समरसता को सदैव प्राथमिकता दी है।" उन्होंने सामाजिक समरसता को समाज के वंचित लोगों को प्राथमिकता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के रूप में परिभाषित किया।

संघ का आदर्श भारतीय संस्कृति की जड़ों को गहरा और सुदृढ़ करना

श्री मोदी ने कहा, "संघ का आदर्श भारतीय संस्कृति की जड़ों को गहरा और सुदृढ़ करना है। इसका प्रयास समाज में आत्मविश्वास और गौरव का संचार करना है। इसका लक्ष्य प्रत्येक हृदय में जनसेवा की ज्योति प्रज्वलित करना है। इसका विजन भारतीय समाज को सामाजिक न्याय का प्रतीक बनाना है। इसका मिशन वैश्विक मंच पर भारत की आवाज को बुलंद करना है। इसका संकल्प राष्ट्र के लिए एक सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करना है।" उन्होंने इस ऐतिहासिक अवसर पर सभी को बधाई देते हुए अपने संबोधन का समापन किया।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले, केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ■

राष्ट्र साधना के 100 वर्ष

नरेन्द्र मोदी

100 वर्ष पूर्व विजयदशमी के महापर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी। ये हजारों वर्षों से चली आ रही उस परंपरा का पुनर्स्थापन था, जिसमें राष्ट्र चेतना समय-समय पर उस युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए,नए-नए अवतारों में प्रकट होती है। इस युग में संघ उसी अनादि राष्ट्र चेतना का पुण्य अवतार है। ये हमारी पीढ़ी के स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमें संघ के शताब्दी वर्ष जैसा महान अवसर देखने मिल रहा है। मैं इस अवसर पर राष्ट्रसेवा के संकल्प को समर्पित कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को शुभकामनाएं देता हूं। मैं संघ के संस्थापक, हम सभी के आदर्शपरम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। संघ की 100 वर्षों की इस गौरवमयी यात्रा की स्मृति में भारत सरकार ने विशेष डाक टिकट और स्मृति सिक्के भी जारी किए हैं।

जिस तरह विशाल नदियों के किनारे मानव सभ्यताएं पनपती हैं, उसी तरह संघ के किनारे भी सैकड़ों जीवन पुष्पित-पल्लवित हुए हैं। जैसे एक नदी जिन रास्तों से बहती हैं, उन क्षेत्रों को अपने जल से समृद्ध करती हैं, वैसे ही संघ ने इस देश के हर क्षेत्र, समाज के हर आयाम को स्पर्श किया है। जिस तरह एक नदी कई धाराओं में ख़ुद को प्रकट करती है, संघ की यात्रा भी ऐसी ही है। संघ के अलग-अलग संगठन भी जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। शिक्षा, कृषि, समाज कल्याण, आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तीकरण, समाज जीवन के ऐसे कई क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है, भाव एक ही है.... राष्ट्र प्रथम।

अपने गठन के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राष्ट्र निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण रास्ता चुना और इस पर चलने के लिए जो कार्यपद्धति चुनी वो थी नित्य-नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ शाखा का मैदान, एक ऐसी प्रेरणा भूमि है, जहां से स्वयंसेवक की अहम् से वयं की यात्रा शुरू होती है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं।

राष्ट्र निर्माण का महान उद्देश्य, व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल, जीवंत कार्यपद्धति यही संघ की सौ वर्षों की यात्रा का आधार बने। इन्हीं स्तंभों पर खड़े होकर संघ ने लाखों स्वयंसेवकों को गढ़ा, जो विभिन्न क्षेत्रों में देश को आगे बढ़ा रहे हैं।

संघ जब से अस्तित्व में आया संघ के लिए देश की प्राथमिकता ही उसकी अपनी प्राथमिकता रही। आज़ादी की लड़ाई के समय परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया, डॉक्टर साहब कई बार जेल तक गए। आजादी की लड़ाई में कितने ही स्वतन्त्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करता रहा। आजादी के बाद भी संघ निरंतर राष्ट्र साधना में लगा रहा। इस यात्रा में संघ के खिलाफ साजिशें भी हुईं, संघ को कुचलने का प्रयास भी हुआ। ऋषितुल्य परम पूज्य गुरुजी को झूठे केस में फंसाया गया। लेकिन संघ के स्वयंसेवकों ने कभी कटुता को स्थान नहीं दिया। क्योंकि वो जानते हैं, हम समाज से अलग नहीं हैं, समाज हमसे ही तो बना है। समाज के साथ एकात्मता और संवैधानिक संस्थाओं के

प्रति आस्था ने संघ के स्वयंसेवकों को हर संकट में स्थित प्रज्ञ रखा है, समाज के प्रति संवेदनशील बनाए रखा है।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियां हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक संघ की हर महान विभूति ने, हर सरसंघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है

प्रारंभ से संघ राष्ट्रभक्ति और सेवा का पर्याय रहा है। जब विभाजन की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया, तब स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। हर आपदा में संघ के स्वयंसेवक अपने सीमित संसाधनों के साथ सबसे आगे खड़े रहते रहे। यह केवल राहत नहीं थी, यह राष्ट्र की आत्मा को संबल देने का कार्य था। खुद कष्ट उठाकर दूसरों के दुःख हरना... ये हर स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वालों में से एक रहते हैं।

अपनी 100 वर्षों की इस यात्रा में संघ ने समाज के अलग-अलग वर्गों में आत्मबोध जगाया, स्वाभिमान जगाया। संघ देश के उन क्षेत्रों में भी कार्य करता रहा है..जो दुर्गम हैं जहां पहुंचना सबसे कठिन है। संघ...दशकों से आदिवासी परंपराओं, आदिवासी रीति-रिवाज, आदिवासी मूल्यों को सहेजने-संवारने में अपना सहयोग देता रहा है...अपना कर्तव्य निभा रहा है। आज सेवा भारती...विद्या भारती, एकल विद्यालय...वनवासी कल्याण आश्रम...आदिवासी समाज के सशक्तीकरण का स्तंभ बनकर उभरे हैं।

समाज में सदियों से घर कर चुकी जो बीमारियां हैं, जो ऊंच-नीच की भावना है, जो कुप्रथाएं हैं, ये हिन्दू समाज की बहुत बड़ी चुनौती रही हैं। ये एक ऐसी गंभीर चिंता है, जिस पर संघ लगातार काम करता रहा है। डॉक्टर साहब से लेकर आज तक संघ की हर महान विभूति ने, हर सरसंघचालक ने भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। परम पूज्य गुरुजी ने निरंतर 'न हिन्दू पतितो भवेत्' की भावना को आगे बढ़ाया। पूज्य बालासाहब देवरस जी कहते थे— छुआछूत अगर पाप नहीं, तो दुनिया में कोई पाप नहीं! सरसंघचालक रहते हुए पूज्य रज्जू भैया जी और पूज्य सुदर्शन जी ने भी इसी भावना को आगे बढ़ाया। वर्तमान सरसंघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी ने भी समरसता के लिए समाज के सामने एक कुआं, एक मंदिर और एक श्मशान का स्पष्ट लक्ष्य रखा है।

जब 100 साल पहले संघ अस्तित्व में आया था तो उस समय की आवश्यकताएं, उस समय के संघर्ष कुछ और थे। लेकिन आज 100 वर्षों बाद जब भारत विकसित होने की तरफ बढ़ रहा है तब आज के समय की चुनौतियां अलग हैं, संघर्ष अलग हैं। दूसरे देशों पर आर्थिक निर्भरता, हमारी एकता को तोड़ने की साजिशें, डेमोग्राफी में बदलाव के षड्यंत्र, हमारी सरकार इन चुनौतियों से तेजी से निपट रही है। मुझे ये खुशी है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी इन चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस रोडमैप भी बनाया है।

संघ के पंच परिवर्तन, स्व बोध, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, नागरिक शिष्टाचार और पर्यावरण; ये संकल्प हर स्वयंसेवक के लिए देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को परास्त करने की बहुत बड़ी प्रेरणा हैं।

स्व बोध की भावना का उद्देश्य गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर अपनी विरासत पर गर्व और स्वदेशी के मूल संकल्प को आगे बढ़ाना है। सामाजिक समरसता के जरिए वंचित को वरीयता देकर सामाजिक न्याय की स्थापना का प्रण है। आज हमारी सामाजिक समरसता को घुसपैठियों के कारण डेमोग्राफी में आ रहे बदलाव से भी बड़ी चुनौती मिल रही है। देश ने भी इससे निपटने के लिए डेमोग्राफी मिशन की घोषणा की है। हमें कुटुम्ब प्रबोधन यानी परिवार संस्कृति और मूल्यों को भी मजबूत बनाना है। नागरिक शिष्टाचार के जरिए नागरिक कर्तव्य का बोध हर देशवासी में भरना है। इन सबके साथ अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुए आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना है।

अपने इन संकल्पों को लेकर संघ अब अगली शताब्दी की यात्रा शुरू कर रहा है। 2047 के विकसित भारत में संघ का हर योगदान देश की ऊर्जा बढ़ाएगा, देश को प्रेरित करेगा। पुनः प्रत्येक स्वयंसेवक को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ■

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

प्रधानमंत्री ने नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन व मुंबई में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शुभारंभ और लोकार्पण किया

आज पूरा देश एक 'विकसित भारत' के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत अपने युवाओं के लिए अनगिनत अवसर प्रदान करता है, उन्होंने हाल ही में शुरू की गई 60,000 करोड़ रुपये की पीएम सेतु योजना का ज़िक्र किया, जिसका उद्देश्य देश भर के विभिन्न आईटीआई को उद्योग जगत से जोड़ना है। उन्होंने बताया कि आज से महाराष्ट्र सरकार ने सैकड़ों आईटीआई और तकनीकी स्कूलों में नए कार्यक्रम शुरू किए हैं। श्री मोदी ने कहा कि इन पहलों के ज़रिए छात्रों को ड्रोन, रोबोटिक्स, विद्युत-चालित वाहन, सौर ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन जैसी उभरती तकनीकों का प्रशिक्षण मिलेगा।

श्री मोदी ने ज़ोर देकर कहा, "आज पूरा देश एक 'विकसित भारत' के संकल्प को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है— एक ऐसा भारत जो गति और प्रगति दोनों से परिभाषित होता हो, जहां जन कल्याण सर्वोपरि हो और सरकारी योजनाएं नागरिकों के जीवन को आसान बनाती हों।"

उन्होंने कहा कि पिछले ग्यारह वर्षों में इसी भावना ने देश के हर कोने में विकास प्रयासों का मार्गदर्शन किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब वंदे भारत सेमी हाई-स्पीड ट्रेनें पटरियों पर दौड़ती हैं, जब बुलेट ट्रेन परियोजनाओं को गति मिलती है, जब चौड़े राजमार्ग और एक्सप्रेसवे नए शहरों को जोड़ते हैं, जब पहाड़ों को चीरकर लंबी सुरंगें बनाई जाती हैं और जब ऊंचे समुद्री पुल दूर के तटों को जोड़ते हैं, तो भारत की गति और प्रगति स्पष्ट दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रगति भारत के युवाओं की आकांक्षाओं को नए पंख देती है।

श्री मोदी ने कहा कि आज के कार्यक्रम ने भारत की विकास यात्रा की गति को जारी रखा है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा एक ऐसी परियोजना है जो एक विकसित भारत के दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह नया हवाई अड्डा महाराष्ट्र के किसानों को यूरोप और मध्य पूर्व के सुपरमार्केट से जोड़ेगा, जिससे ताजी उपज, फल, सब्जियां और मत्स्य उत्पाद तेज़ी से वैश्विक बाजारों तक पहुंच सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह हवाई अड्डा आस-पास के लघु और मध्यम उद्योगों की निर्यात लागत को कम करेगा, निवेश को बढ़ावा देगा और नए उद्यमों की स्थापना को प्रोत्साहित करेगा।

पदभार ग्रहण करने के बाद 2014 में दिए गए अपने संबोधन को याद करते हुए श्री मोदी ने अपना विज़न दोहराया कि हवाई चप्पल पहनने वाले भी हवाई यात्रा करने में सक्षम होने चाहिए। इस सपने को साकार करने के लिए देश भर में नए हवाई अड्डों का निर्माण आवश्यक था। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस मिशन को गंभीरता से लिया है और पिछले ग्यारह वर्षों में एक के बाद एक नए हवाई अड्डों

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 08 अक्टूबर, 2025 को महाराष्ट्र के मुंबई में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के उद्घाटन के दौरान एक प्रदर्शनी का दौरा किया और दिव्यांग बच्चों के साथ बातचीत की

> हमारी सरकार के लिए राष्ट्र और उसके नागरिकों की सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। आज का भारत पूरी ताकत से जवाब देता है और दुश्मन की ज़मीन पर हमला करता है, जैसाकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया भर में देखा और स्वीकार किया गया था

का निर्माण किया गया है। 2014 में भारत में केवल 74 हवाई अड्डे थे; आज यह संख्या 160 को पार कर गई है।

भारत दुनिया का सबसे युवा देश

श्री मोदी ने कहा, "भारत दुनिया का सबसे युवा देश है और इसकी ताकत इसके युवाओं में निहित है।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हर सरकारी नीति युवाओं के लिए रोज़गार के अधिकतम अवसर पैदा करने पर केंद्रित है। उन्होंने 76,000 करोड़ रुपये की वधावन पत्तन परियोजना का उदाहरण देते हुए कहा कि अवसंरचना में निवेश बढ़ने से रोज़गार सृजन होता है।

यह उल्लेख करते हुए कि आज मेट्रो लाइन का उद्घाटन हुआ है, लेकिन यह मेट्रो कुछ पूर्ववर्ती सरकारों के कार्यों की याद दिलाती है, श्री मोदी ने इसके शिलान्यास समारोह में अपनी भागीदारी को याद किया, जिसने मुंबई के लाखों परिवारों में मुश्किलें कम होने की उम्मीद जगाई थी। उन्होंने टिप्पणी की कि बाद की सरकार ने इस परियोजना को रोक दिया, जिससे देश को हज़ारों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ और कई वर्षों तक असुविधा का सामना करना पड़ा। प्रधानमंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस मेट्रो लाइन के पूरा होने से दो से ढाई घंटे का सफ़र अब सिर्फ़ 30 से 40 मिनट में पूरा हो जाएगा। श्री मोदी ने कहा कि मुंबई जैसे शहर में जहां हर मिनट मायने रखता है, नागरिकों को तीन-चार साल तक इस सुविधा से वंचित रखा गया, उन्होंने इसे घोर अन्याय बताया।

आज का भारत पूरी ताकत से जवाब देता है

श्री मोदी ने कहा कि भारत की आर्थिक राजधानी और सबसे जीवंत शहरों में से एक 'मुंबई' को 2008 के हमलों में आतंकवादियों ने निशाना बनाया था। उन्होंने कहा कि उस समय सत्ता में रही सरकार ने कमज़ोरी का संदेश दिया और आतंकवाद के आगे घुटने टेक दिए। श्री मोदी ने विपक्षी दल के एक वरिष्ठ नेता और पूर्व गृह मंत्री द्वारा हाल ही में किए गए एक खुलासे का हवाला दिया, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि मुंबई हमलों के बाद भारत के सशस्त्र बल पाकिस्तान पर हमला करने के लिए तैयार थे। उन्होंने कहा कि पूरा देश इस कार्रवाई का समर्थन करता है। हालांकि, विपक्षी नेता के अनुसार सरकार ने एक विदेशी दबाव के कारण सैन्य कार्रवाई रोक दी।

प्रधानमंत्री ने विपक्षी दल से यह स्पष्ट करने की मांग की कि इस निर्णय को किसने प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि इस निर्णय ने मुंबई और राष्ट्र की भावनाओं को ठेस पहुंचाई। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि विपक्षी दल की कमज़ोरी ने आतंकवादियों को बढ़ावा दिया और राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किया, जिसकी कीमत देश को निर्दोष लोगों की जान देकर चुकानी पड़ी।

श्री मोदी ने कहा, "हमारी सरकार के लिए राष्ट्र और उसके नागरिकों की सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है।" उन्होंने कहा कि आज का भारत पूरी ताकत से जवाब देता है और दुश्मन की ज़मीन पर हमला करता है, जैसाकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया भर में देखा और स्वीकार किया गया था।

यह कहते हुए कि सरकार नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने और राष्ट्र को मज़बूत बनाने के लिए कदम उठाना जारी रखेगी, श्री मोदी ने सभी से स्वदेशी अपनाने और गर्व से इस बात को कहने का आग्रह किया, "यह स्वदेशी है"; एक ऐसा मंत्र जो हर घर और बाज़ार में गूंजना चाहिए।

श्री मोदी ने यह कहते हुए अपने संबोधन का समापन किया कि भारत के विकास को गति देने में महाराष्ट्र हमेशा से सबसे आगे रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य की उनकी सरकारें महाराष्ट्र के प्रत्येक शहर और गांव की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अथक प्रयास करती रहेंगी।

इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस, केंद्रीय मंत्री श्री रामदास अठावले, श्री राममोहन नायडू किंजरापु, श्री मुरलीधर मोहोल, भारत में जापान के राजदूत श्री केइची ओनो तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ■

भाजपा आगामी चुनावों में विजयी होकर 'विकसित केरलम' के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगी: जगत प्रकाश नड्डा

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 27 सितंबर, 2025 को कोल्लम में केरल प्रदेश भाजपा पदाधिकारियों को संबोधित किया। इस अवसर पर श्री नड्डा ने केरल और पूरे भारत में भाजपा की विकास पहलों पर प्रकाश डाला एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के परिवर्तनकारी शासन के तहत उठाए जाने वाले कदमों से सभी को अवगत करवाया, जिसमें अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधार, सामाजिक कल्याण योजनाएं एवं बुनियादी ढांचा परियोजनाएं प्रमुख हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार और निष्क्रियता के लिए प्रदेश सरकार की आलोचना की, जबकि भाजपा की वैचारिक स्थिरता और जन-आधारित दृष्टिकोण की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम के दौरान केरल प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री राजीव चंद्रशेखर, केरल प्रदेश भाजपा प्रभारी श्री प्रकाश जावडेकर, अन्य वरिष्ठ नेता एवं कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे।

अन्य पार्टियों ने अपना संतुलन खो दिया है

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक उत्तरदायी, ज़िम्मेदार और जवाबदेह सरकार चल रही है; एक 'रिपोर्ट कार्ड' वाली सरकार। जवाबदेही और प्रदर्शन की यह नई राजनीतिक संस्कृति 2014 के बाद ही उभरी, जिसने तुष्टीकरण, जातिवाद, विभाजन और वोट बैंक की रणनीतियों पर आधारित पहले की राजनीति का स्थान ले लिया। वहीं अन्य पार्टियों ने अपना संतुलन खो दिया है। आज एक चलन है कि सभी राजनीतिक दल क्षेत्रीय दल बनकर रह गए हैं, जबकि क्षेत्रीय दल तेज़ी से पारिवारिक दलों में तब्दील हो रहे हैं।

श्री नड्डा ने मोदी सरकार के सुधारोन्मुखी दृष्टिकोण की चर्चा करते हुए कहा कि हाल ही में कई नई पहल शुरू की गई हैं। उन्होंने 22 सितंबर, नवरात्रि के पहले दिन अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों के कार्यान्वयन को भारत की कर प्रणाली को सरल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया और इसकी तुलना 2017 से पहले के जटिल और खंडित कराधान ढांचे से की। उन्होंने कहा कि भारत ने पिछले 11 वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है।

केरल में विकास पहल

श्री नड्डा ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा केरल में विभिन्न विकास पहलों के अलावा सामाजिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं, जिनमें सुपर-स्पेशलिटी ब्लॉक और मेडिकल कॉलेजों की स्थापना शामिल है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के बारे में मीडिया द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर कहा गया कि ये संस्थान सही समय पर और सही स्थानों पर स्थापित किए जाएंगे।

केरल में एलडीएफ और यूडीएफ सरकारों की भूमिका की आलोचना की गई और राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के नेतृत्व वाले पिछले 10 वर्षों के शासन को नीतिगत पक्षाघात, गैर-प्रदर्शन, तुष्टीकरण, विकास की कमी, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अक्षमता वाला काल बताया गया। एलडीएफ सरकार ने पिछले एक दशक में केरल के संसाधनों का इसी तरह कुप्रबंधन किया है, जिसके

संगठनात्मक नियुक्तियां

जगदीश विश्वकर्मा गुजरात प्रदेश भाजपा के नए अध्यक्ष चुने गए

गुजरात के सहकारिता राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा को 02 अक्टूबर, 2025 को गांधीनगर स्थित प्रदेश पार्टी मुख्यालय में भारतीय जनता पार्टी का नया प्रदेश अध्यक्ष चुना गया। श्री विश्वकर्मा ने केंद्रीय मंत्री और पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री सी.आर. पाटिल का स्थान लिया है।

आदित्य साहू झारखंड प्रदेश भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 3 अक्टूबर को झारखंड के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद श्री आदित्य साहू को झारखंड प्रदेश भाजपा का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया। श्री साहू की प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति श्री रवीन्द्र कुमार राय के स्थान पर की गई।

भाजपा ने बिहार, तमिलनाडु एवं पश्चिम बंगाल के लिए प्रदेश चुनाव प्रभारी और सह-प्रभारियों की घोषणा की

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 25 सितंबर, 2025 को आगामी बिहार विधानसभा चुनावों के लिए केंद्रीय मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान को प्रदेश चुनाव प्रभारी नियुक्त

किया। पार्टी ने केंद्रीय मंत्री श्री सीआर पाटिल और उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य को प्रदेश चुनाव सह-प्रभारी नियुक्त किया।

तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बैजयंत पांडा को चुनाव प्रभारी नियुक्त किया। श्री मुरलीधर मोहोल को सह-प्रभारी नियुक्त किया गया।

इसी प्रकार, केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के लिए प्रदेश चुनाव प्रभारी नियुक्त किया गया और लोकसभा सांसद श्री बिप्लब कुमार देब को प्रदेश सह-प्रभारी नियुक्त किया गया।

परिणामस्वरूप कोई विकास नहीं हुआ और व्यापक भ्रष्टाचार हुआ, जिसमें वरिष्ठ नेता गलत कामों में शामिल रहे। कानूनी कार्रवाई की जाएगी और यह आश्वासन दिया गया कि कोई भी सज़ा से नहीं बचेगा। 30 वर्ष से कम आयु के युवाओं में बेरोजगारी 29 प्रतिशत है, जो राज्य में सबसे अधिक है। आर्थिक संकट के लिए खराब प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया गया और राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों से समझौता करने के लिए सरकार की आलोचना की गई। वर्तमान सरकार भारतीय सेना द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के दौरान की गई सफल कार्रवाई को उचित रूप से स्वीकार करने में विफल रही।

केरल सरकार प्रदेश के विकास में बाधाएं खड़ी कर रही है

श्री नड्डा ने कहा कि केरल की वर्तमान सरकार प्रदेश के विकास में बाधाएं खड़ी करने का प्रयास कर रही है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि जो भी प्रगति हुई है, वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के कारण हुई है।

उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि श्री राजीव चंद्रशेखर के नेतृत्व में केरल भाजपा ने 'विकसित केरलम' की दिशा में कार्य करने का संकल्प लिया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि विकास ही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है और 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता दोहराते हुए इन सिद्धांतों को अक्षरशः और पूर्ण भावना से लागू करने पर ज़ोर दिया।

श्री नड्डा ने पार्टी कार्यकर्ताओं से आगामी नगर निगम चुनावों की पूरी लगन से तैयारी करने का आग्रह किया, जिन्हें उन्होंने विधानसभा चुनावों का पूर्वाभास बताया। 2016 में केरल के प्रभारी के रूप में अपनी भूमिका को याद करते हुए उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रदेश इस बार मज़बूत परिणाम देगा और पार्टी सत्ता में आएगी। श्री नड्डा ने केरल में भारतीय जनता पार्टी की सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह सफलता प्रदेश के विकास एवं केरल के आम लोगों की बेहतरी में परिवर्तित होगी। ■

भाजपा सत्ता के लिए नहीं, बल्कि सेवा के लिए सरकार में है : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली में 5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर नवनिर्मित दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय का उद्घाटन किया और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया। दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा ने प्रधानमंत्रीजी का शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा, दिल्ली प्रदेश की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता, सांसद, दिल्ली सरकार में मंत्री, विधायक सहित भारी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे। अभी तक दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय का पता 14, पंडित पंत मार्ग पर था। अब प्रदेश भाजपा कार्यालय का पता पार्टी के केंद्रीय कार्यालय के बगल में 5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग हो गया है।

लाखों कार्यकर्ताओं के त्याग और परिश्रम का परिणाम

श्री मोदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की स्थापना को 45 वर्ष हो चुके हैं। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लालकृष्ण आडवाणी, नानाजी देशमुख, राजमाता विजयाराजे सिंधिया, श्री मुरली मनोहर जोशी जैसे अनेक महान व्यक्तित्वों के आशीर्वाद और परिश्रम से यह पार्टी लगातार आगे बढ़ी है। लेकिन जिस बीज से भाजपा आज इतना बड़ा वटवृक्ष बनी है, उसका रोपण अक्टूबर, 1951 में हुआ था, जब डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में जनसंघ की स्थापना हुई थी। उसी दौर में दिल्ली जनसंघ को वैद्य गुरुदत्त के रूप में अपना पहला अध्यक्ष मिला। समय-समय पर श्री लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. महावीर जैसे नेताओं ने दिल्ली जनसंघ का दायित्व संभाला। 1980 में जब भाजपा की स्थापना हुई तो विजय कुमार मल्होत्रा जी को दिल्ली भाजपा के पहले अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। आज दिल्ली भाजपा जिस मजबूती के साथ खड़ी है, वह बीते दशकों में लाखों कार्यकर्ताओं के त्याग और परिश्रम का परिणाम है। केदारनाथ साहनी जी, साहब सिंह वर्मा जी, मदन लाल खुराना जी जैसे वरिष्ठ नेताओं ने सेवा की अमिट राह दिखाई। अरुण जेटली जी और सुषमा स्वराज जी जैसे कितने ही व्यक्तित्वों ने पार्टी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

दिल्ली के लोगों की हर संभव सेवा

उन्होंने कहा कि दिल्ली और भाजपा का संबंध केवल एक शहर और पार्टी का नहीं है, यह संबंध सेवा, संस्कार और सुख-दुःख में साथ निभाने का है। पहले जनसंघ और फिर भाजपा के रूप में हमारी पार्टी हमेशा दिल्ली के दिल और दिल्ली के हितों से जुड़ी रही है। जनसंघ की स्थापना के बाद से ही हमने दिल्ली के लोगों की हर संभव सेवा की है।

बंटवारे के बाद दिल्ली आए पीड़ितों के पुनर्वास की व्यवस्था भी जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने की थी। जब यहां मेट्रोपॉलिटन काउंसिल बनी तो लालकृष्ण आडवाणी जी और विजय कुमार मल्होत्रा जी जैसे नेता दिल्ली की जनता की आवाज बने। आपातकाल के समय दिल्ली के लोगों के साथ जनसंघ के नेताओं ने सत्ता के दमन के खिलाफ संघर्ष किया। 1984 में सिख दंगों के दौरान जब दिल्ली की आत्मा और मानवता पर भयंकर आघात हुआ, उस संकट की घड़ी में भी दिल्ली भाजपा के कार्यकर्ताओं ने हमारे सिख भाइयों और बहनों की हर संभव रक्षा की।

उम्मीदों पर खरा उतरें

श्री मोदी ने कहा कि पूरे देश तक विचारों को पहुंचाने में दिल्ली के कार्यकर्ताओं के इस अथक पुरुषार्थ और परिश्रम ने भाजपा को यहां तक पहुंचाने में बड़ी मदद की है। इसलिए आज जब हम इस नए कार्यालय में प्रवेश कर रहे हैं तो हमें दिल्ली भाजपा के इतिहास और उसके सेवा कार्यों से निरंतर प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना होगा। हमारे लिए भाजपा का कोई भी कार्यालय किसी देवालय या मंदिर से कम नहीं है। भाजपा का कोई भी कार्यालय केवल इमारत नहीं है, बल्कि यह मजबूत कड़ी है जो पार्टी को जमीन से और जनता की अपेक्षाओं से जोड़कर रखती है। भाजपा सत्ता के लिए नहीं, बल्कि सेवा के लिए सरकार में है। यही चेतना इन कार्यालयों से जागृत रहती है। इसलिए हमें लगातार प्रयास करना होगा कि दिल्ली भाजपा के नए कार्यालय की पहचान उसकी सुविधाओं से नहीं, बल्कि जनसुनवाई और जनसेवा से हो, यह बात हमें हमेशा याद रखनी होगी। इस कार्यालय में हमारा कार्यकर्ता किसी न किसी जरूरतमंद की उम्मीदें लेकर आएगा। उन उम्मीदों पर खरा उतरना हम सबका सामूहिक प्रयास होना चाहिए। इस कार्यालय में बैठकर लिए गए हर निर्णय में जितनी संवेदना और सेवा का भाव होगा, उतना ही दिल्ली के लोगों का हित होगा। ■

यह कार्यालय कार्यकर्ताओं के लिए संस्कार केंद्र के रूप में कार्य करेगा : जगत प्रकाश नड्डा

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 29 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली स्थित 5, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर नवनिर्मित दिल्ली प्रदेश भाजपा कार्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित किया। ज्ञात हो कि इस नए प्रदेश कार्यालय की नींव श्री नड्डा ने 09 जून, 2023 को रखी थी। नया प्रदेश कार्यालय, पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय (6A, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग) के ठीक बगल में है।

श्री नड्डा ने इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन, सहयोग और दूरदर्शिता की भूरि-भूरि सराहना करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पार्टी के संगठनात्मक विकास और कार्यकर्ताओं के हित को हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस कार्यालय के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी का आधुनिक और जीवन संपर्क केंद्र स्थापित हुआ है, जो संगठनात्मक प्रशिक्षण, रिसर्च और कार्यकर्ताओं के लिए संस्कार केंद्र के रूप में कार्य करेगा।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को हम ऐसे संगठन शिल्पी के रूप में जानते हैं, जिन्होंने हर बारीकी पर ध्यान दिया कि कार्यालय में कंप्यूटर होना चाहिए, प्रवास के लिए व्यवस्था करनी चाहिए और पार्टी की अपनी वाहन सुविधा होनी चाहिए, भाड़े की गाड़ियों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। वर्ष 2013 में जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कैंपेन कमिटी के चेयरमैन थे, उस समय 11 अशोक रोड कार्यालय का नवीनीकरण किया गया और मोदी जी ने कहा कि सरकारी भवनों में व्यवस्था है, लेकिन पार्टी का अपना कार्यालय होना चाहिए। हमें खुशी है कि 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने इस इच्छा को दोबारा व्यक्त किया और तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के नेतृत्व में देशभर में लगभग 787 कार्यालय बनाने का निर्णय लिया गया, जिनमें से आज दिल्ली प्रदेश का यह 618वां कार्यालय बनकर तैयार हुआ है।

> यह नया कार्यालय रिसर्च फैसिलिटी से युक्त है, जिसमें मीडिया के लिए अलग व्यवस्था, लाइब्रेरी, कॉन्फ्रेंस हॉल और मीटिंग सुविधाएं शामिल हैं और यह कार्यालय हर दृष्टि से सुसज्जित है

श्री नड्डा ने कहा कि यह नया कार्यालय रिसर्च फैसिलिटी से युक्त है, जिसमें मीडिया के लिए अलग व्यवस्था, लाइब्रेरी, कॉन्फ्रेंस हॉल और मीटिंग सुविधाएं शामिल हैं और यह कार्यालय हर दृष्टि से सुसज्जित है। जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री थे, तब उन्होंने स्पष्ट किया था कि ऑफिस और कार्यालय में अंतर होता है। ऑफिस केवल सुबह 10 बजे खुलता है और शाम 5 बजे बंद हो जाता है, जबकि भारतीय जनता पार्टी का कार्यालय जीवन संपर्क का केंद्र है, जो 24 घंटे, 365 दिन चलता है। यह कार्यालय केवल मिलने की जगह नहीं है, बल्कि एक संस्कार केंद्र है, जहां संस्कारों का उदय होता है और कार्यकर्ताओं को संगठन को समझने का अवसर मिलता है। श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की संगठन शिल्पी वाली सोच आज हम कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं। ■

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में संपन्न होगा

भारत निर्वाचन आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के कार्यक्रम की आधिकारिक घोषणा कर दी है। यह चुनाव एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक प्रक्रिया है, क्योंकि वर्तमान बिहार विधानसभा का कार्यकाल 22 नवंबर, 2025 को समाप्त हो रहा है। प्रदेश में 243 विधानसभा क्षेत्र हैं, इन सभी निर्वाचन क्षेत्रों में सुचारू एवं सुव्यवस्था चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए दो चरणों में मतदान होगा। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 दो चरणों में आयोजित किया जाएगा।

पहला चरण

- पहले चरण के मतदान में 121 विधानसभा क्षेत्र शामिल होंगे।
- अधिसूचना तिथिः 10 अक्टूबर, 2025
- नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथिः 17 अक्टूबर, 2025
- नामांकन पत्रों की जांचः 18 अक्टूबर, 2025
- नाम वापसी की अंतिम तिथिः 20 अक्टूबर, 2025
- मतदान तिथिः 6 नवंबर, 2025
- मतगणनाः 14 नवंबर, 2025

दूसरा चरण

दूसरे चरण में 122 विधानसभा क्षेत्र शामिल होंगे।

- अधिसूचना तिथिः 13 अक्टूबर, 2025
- नामांकन दाखिल करने की अंतिम तिथिः 20 अक्टूबर, 2025
- नामांकन पत्रों की जांचः 21 अक्टूबर, 2025
- नाम वापसी की अंतिम तिथिः 23 अक्टूबर, 2025
- मतदान तिथिः 11 नवंबर, 2025
- मतगणनाः 14 नवंबर, 2025
- दोनों चरणों के लिए मतगणना 14 नवंबर, 2025 को होगी। ■

दीनदयालजी का 'अंत्योदय' चिंतन हमें समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने की प्रेरणा देता रहेगा'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह ने 25 सितंबर, 2025 को नई दिल्ली स्थित भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। श्री नड्डा और श्री शाह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर पार्टी द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान 'सेवा पखवाड़ा' के तहत पार्टी मुख्यालय के दीनदयाल उपाध्याय पार्क में 'सिंदूर' का पौधारोपण कर प्रकृति के संरक्षण के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता व्यक्त की। श्री नड्डा ने 'स्वच्छता ही सेवा 2025' अभियान के तहत श्रमदान भी किया। ज्ञात हो कि 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक भारतीय जनता पार्टी द्वारा देश भर में हर्षोल्लास से सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है, जिसमें सेवा, संस्कृति, पर्यावरण संबंधी अलग-अलग कार्य किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में पार्टी के कई राष्ट्रीय महामंत्री, केंद्रीय मंत्री, वरिष्ठ पदाधिकारी एवं पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्री नड्डा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, संगठन और भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु समर्पित रहा। 'अंत्योदय' का उनका चिंतन हमें समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने की सदैव प्रेरणा देता रहेगा। सोशल मीडिया प्लेटफोर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए उन्होंने लिखा कि मां भारती के वरद पुत्र, महान राष्ट्रवादी विचारक एवं भारतीय जनता पार्टी के पितृपुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को उनकी जन्म जयंती पर कोटिशः नमन करता हूं। सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत शुचिता एवं गरिमा के उच्चतम आदर्श रहे श्रद्धेय दीनदयालजी ने भारतीय संस्कृति की नींव पर सशक्त, समृद्ध और सामर्थ्यशाली भारत के निर्माण के लिए 'एकात्म मानववाद' का महान दर्शन प्रस्तुत किया। अंत्योदय की उनकी अवधारणा 'विकसित और आत्मनिर्भर भारत' निर्माण के संकल्प की सिद्धि में अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रसेवा एवं जनसेवा के उनके महान विचार और कार्य करोड़ों कार्यकर्ताओं के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अंत्योदय और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार देकर जिस मजबूत और आत्मगौरव से भरे राष्ट्र की संकल्पना की थी, वह आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में साकार हो रहा है। उन्होंने सोशल मीडिया 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए लिखा कि भारतीय जनसंघ के संस्थापक व 'एकात्म मानववाद' के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का उनकी जयंती पर वंदन करता हूं। पंडित दीनदयालजी ने एकात्म मानव दर्शन के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक समग्र इकाई मानकर आर्थिक प्रगति के साथ नैतिक व सांस्कृतिक उत्थान पर भी बल दिया। जनसंघ के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाला राजनीतिक विकल्प दिया। दीनदयालजी के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' व 'अन्त्योदय' के सिद्धांत हर एक राष्ट्रप्रेमी के लिए प्रेरणीय हैं।

इससे पहले भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर प्रधानमंत्रीजी के आह्वान पर आज नई दिल्ली में 'स्वच्छता ही सेवा 2025' अभियान में प्रतिभाग किया और श्रमदान किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, स्वच्छता का प्रत्येक कार्य स्वच्छ भारत के प्रति हमारे साझा कर्तव्य के प्रति एक श्रद्धांजलि है। उन्होंने कहा, "मैं प्रत्येक नागरिक से इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने और सभी के लिए एक स्वच्छ, स्वस्थ और हरित भारत बनाने में योगदान देने का आग्रह करता हूं।" ■

कोशी, पूर्णिया और भागलपुर क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ताओं का सम्मेलन, अररिया (बिहार)

यह चुनाव बिहार को प्रगति के रास्ते पर ले जाने का चुनाव है: अमित शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री अमित शाह ने 27 सितंबर, 2025 को अररिया (बिहार) में कोशी, पूर्णिया और भागलपुर क्षेत्र के भाजपा के मंडल स्तर तक के कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित किया और पार्टी कार्यकर्ताओं से बिहार में एक बार फिर विकास के प्रति समर्पित एनडीए की सरकार बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बिहार की जनता एनडीए को 160 से अधिक सीटों पर विजयी बनाकर सरकार बनाएगी। कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री दिलीप जायसवाल, बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी एवं श्री विजय सिन्हा, केंद्रीय मंत्री श्री नित्यानंद राय, अररिया सांसद श्री प्रदीप सिंह सहित पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेतागण उपस्थित रहे।

श्री शाह ने कहा कि राहुल गांधी और लालू प्रसाद यादव के लिए यह चुनाव अपनी पार्टी को जिताने का चुनाव है। लालू प्रसाद यादव के लिए अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाने का चुनाव है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए यह चुनाव पूरे बिहार से घुसपैठियों को खदेड़ देने का चुनाव है। बिहार की जनता एक बार एनडीए को दो-तिहाई बहुमत से विजयी बनायेगी, तो बिहार की पवित्र भूमि से घुसपैठियों को चुन-चुन कर भगाया जाएगा। भाजपा के लिए यह चुनाव कोशी क्षेत्र को हमेशा के लिए बाढ़ से मुक्त करने का चुनाव है। बिहार की जनता को इस बार चार बार दीपावली मनानी है। पहली दीपावली पारंपरिक रूप से प्रभु श्रीराम के अयोध्या लौटने के उपलक्ष्य में मनाई जाएगी। दूसरी दीपावली उस ऐतिहासिक अवसर के लिए, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 75 लाख जीविका दीदियों के बैंक खातों में 10,000 रुपए की राशि हस्तांतरित की है। तीसरी दीपावली इसलिए मनाई जानी है कि प्रधानमंत्रीजी ने जीएसटी में सुधार करते हुए 395 से अधिक वस्तुओं पर टैक्स 15 से 20 प्रतिशत तक कम किए हैं और चौथी दीपावली, तब जब बिहार की जनता 160 से अधिक सीटें देकर एनडीए और भाजपा की सरकार बनाएगी।

उन्होंने कहा कि जिस तरह से जीविका दीदियों के पास 10,000 रुपए पहुंचे, उसी तरह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा हर वर्ष 6,000 रुपए किसानों के खातों में भेजे जा रहे हैं और इस बार उनके पास बम्पर फसल होने वाली है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होगी। इस दीपावली हम सबको यह संकल्प लेना है कि अपनी सभी खरीदारी में स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता देंगे। बिहार में लालू एंड कंपनी ने राज्य को लूटने और अनेक घोटाले करने का कार्य किया, वहीं कांग्रेस ने 12 लाख करोड़ रुपये के घोटाले कर देश के संसाधनों को लूटने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के विकास के

लिए ढेर सारे कार्य किए हैं। पूर्णिया की धरती से ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मखाना बोर्ड की घोषणा की। भागलपुर में 2400 मेगावॉट का कोयला विद्युत संयंत्र स्थापित किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्णिया को एयरपोर्ट देने का वादा किया था, वह वादा भी पूरा हो चुका है। आज पटना, गया, दरभंगा और पूर्णिया चारों एयरपोर्ट शुरू हो चुके हैं और बिहटा एयरपोर्ट भी जल्द ही शुरू हो जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार को कुल छह एयरपोर्ट दिए हैं। पहले नेपाल की नदियां जब भारत आती थीं, तो कोशी में बाढ़ आती थी, लेकिन अब उसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2025 के बजट में कोसी-मेची लिंक परियोजना की घोषणा की है, जिससे बाढ़ की जगह खेतों में सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। लालू प्रसाद यादव और इंडी गठबंधन ने बिहार के लिए कोई काम नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 1 करोड़ 17 लाख माताओं को गैस सिलेंडर दिए, 1 करोड़ 50 लाख लोगों को शौचालय प्रदान किए और 48 लाख माताओं को मातृ वंदना योजना का लाभ दिया और कल 75,000 जीविका दीदियों के बैंक अकाउंट में 10,000 रुपए ट्रांसफर किए गए। बिहार की एनडीए सरकार ने वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन और दिव्यांग पेंशन 400 रुपये से बढ़ाकर 1100 रुपये करने का कार्य किया है।

उन्होंने कहा कि सीतामढ़ी के पुनौरा धाम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के संयुक्त प्रयास से 900 करोड़ रुपये की लागत से सीता माता का भव्य मंदिर बनाने की शुरुआत की गई है।

श्री शाह ने पार्टी कार्यकर्ताओं से आह्वान करते हुए कहा कि यह चुनाव बिहार को प्रगति के रास्ते पर ले जाने का चुनाव है। यह बिहार से घुसपैठियों को निकालने का चुनाव है। यह चुनाव इस लिए है कि लालू प्रसाद यादव का जंगलराज फिर से न आए। यह चुनाव देश व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को मजबूत करने का चुनाव है। हम 160 का आंकड़ा पार करेंगे और फिर से एनडीए सरकार बनाएंगे और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को मजबूत करेंगे। ■

रेल आधारित मोबाइल लांचर प्रणाली से मध्यम दूरी की अग्नि-प्राइम मिसाइल का सफल प्रक्षेपण

इस उड़ान परीक्षण ने भारत को उन चुनिंदा देशों के समूह में शामिल कर दिया है, जिन्होंने रेल नेटवर्क से कैनिस्टराइज्ड प्रक्षेपण प्रणाली विकसित की है

डीआरडीओ ने सामरिक बल कमान (एसएफसी) के सहयोग से 24 सितंबर को पूर्ण परिचालन परिदृश्य के अंतर्गत रेल आधारित मोबाइल लांचर प्रणाली से मध्यम दूरी की अग्नि-प्राइम मिसाइल का सफल प्रक्षेपण किया। 2000 किलोमीटर तक की दूरी तक मार करने के लिए डिजाइन की गई अगली पीढ़ी की यह मिसाइल विभिन्न उन्नत सुविधाओं से लैस है।

अपनी तरह के इस पहले प्रक्षेपण को विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए रेल आधारित मोबाइल लॉन्चर से किया गया और यह रेल नेटवर्क से बिना किसी बाधा के प्रक्षेपित की जा सकती है। यह मिसाइल देश भर में गतिशीलता प्रदान करने के साथ-साथ कम दृश्यता के साथ-साथ कम प्रतिक्रिया समय में भी प्रक्षेपण करने की क्षमता रखती है। यह आत्मनिर्भर है और अत्याधुनिक संचार प्रणालियों और सुरक्षा तंत्रों सहित सभी स्वतंत्र प्रक्षेपण क्षमता सुविधाओं से सुसज्जित है।

मिसाइल के प्रक्षेप पथ की विभिन्न ग्राउंड स्टेशनों से निगरानी की गई और इस प्रक्षेपण ने मिशन के सभी उद्देश्यों को पूरा किया। इस सफल प्रक्षेपण से भविष्य में रेल आधारित प्रणालियों को सेवाओं में शामिल करना संभव होगा।

सड़क मोबाइल अग्नि-पी को सफल उड़ान परीक्षणों की एक श्रृंखला के बाद पहले ही सेवा में शामिल कर लिया गया है।

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने मध्यम दूरी की अग्नि-प्राइम मिसाइल के सफल परीक्षण पर डीआरडीओ, एसएफसी और सशस्त्र बलों को बधाई देते हुए कहा कि इस उड़ान परीक्षण ने भारत को उन चुनिंदा देशों के समूह में शामिल कर दिया है, जिन्होंने रेल नेटवर्क से कैनिस्टराइज्ड प्रक्षेपण प्रणाली विकसित की है। ■

जहाज निर्माण और समुद्री क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए 69,725 करोड़ रुपये के पैकेज को मिली मंजूरी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में समुद्री क्षेत्र के सामरिक और आर्थिक महत्व को स्वीकार करते हुए केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 24 सितंबर, 2025 को भारत के जहाज निर्माण और समुद्री इको-सिस्टम को पुनर्जीवित करने के लिए 69,725 करोड़ रुपये के एक व्यापक पैकेज को मंजूरी दी।

इस पैकेज के तहत जहाज निर्माण वित्तीय सहायता योजना (एसबीएफएएस) को 31 मार्च, 2036 तक बढ़ाया जाएगा और इसकी कुल राशि 24,736 करोड़ रुपये होगी। इस योजना का उद्देश्य भारत में जहाज निर्माण को प्रोत्साहित करना है और इसमें 4,001 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ एक शिपब्रेकिंग क्रेडिट नोट भी शामिल है।

इसके अलावा, इस क्षेत्र के लिए दीर्घकालिक वित्तपोषण प्रदान करने हेतु 25,000 करोड़ रुपये की राशि के साथ समुद्री विकास निधि (एमडीएफ) को मंजूरी दी गई है। इसमें भारत सरकार की 49 प्रतिशत भागीदारी वाला 20,000 करोड़ रुपये का समुद्री निवेश कोष और ऋण की प्रभावी लागत कम करने तथा परियोजना की बैंकिंग क्षमता में सुधार हेतु 5,000 करोड़ रुपये का ब्याज प्रोत्साहन कोष शामिल है। इसके अलावा, 19,989 करोड़ रुपये के बजटीय परिव्यय वाली जहाज निर्माण विकास योजना (एसबीडीएस) का उद्देश्य घरेलू जहाज निर्माण क्षमता को सालाना 4.5 मिलियन सकल टन भार तक बढ़ाना, मेगा जहाज निर्माण समूहों को सहायता प्रदान करना, इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार करना, भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय के अंतर्गत भारत जहाज प्रौद्योगिकी केंद्र की स्थापना करना और जहाज निर्माण परियोजनाओं के लिए बीमा सहायता सहित जोखिम कवरेज प्रदान करना है।

इस समग्र पैकेज से 4.5 मिलियन सकल टन भार की जहाज निर्माण क्षमता का विकास होने, लगभग 30 लाख रोजगार सृजित होने और भारत के समुद्री क्षेत्र में लगभग 4.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश आकर्षित होने की उम्मीद है। ■

भारतीय वायुसेना के लिए 97 एलसीए एमके1ए विमानों की खरीद के लिए एचएएल के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर

रक्षा मंत्रालय ने 25 सितंबर, 2025 को 62,370 करोड़ रुपये (करों को छोड़कर) से अधिक की लागत से भारतीय वायु सेना के लिए 68 लड़ाकू विमानों और 29 ट्विन सीटर सहित 97 हल्के लड़ाकू विमान (एलसीए) एमके1ए और संबंधित उपकरणों की खरीद के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। इन विमानों की डिलीवरी 2027-28 के दौरान शुरू होगी और छह साल की अवधि में पूरी हो जाएगी।

विमान में 64 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री होगी, जिसमें जनवरी, 2021 में हस्ताक्षरित पिछले एलसीए एमके1ए अनुबंध के अलावा 67 अतिरिक्त आइटम शामिल किए जाएंगे। उत्तम एक्टिव इलेक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड एरे (एईएसए) रडार, स्वयं रक्षा कवच और कंट्रोल सरफेस एक्ट्यूएटर्स जैसी उन्नत स्वदेशी रूप से विकसित प्रणालियों का एकीकरण, आत्मनिर्भरता पहल को और मजबूत करेगा। इस परियोजना को लगभग 105 भारतीय कंपनियों के एक मजबूत विक्रेता आधार द्वारा समर्थित किया जा रहा है, जो विस्तृत घटकों के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से संलग्न हैं। ■

वरिष्ठ भाजपा नेता विजय कुमार मल्होत्रा नहीं रहे

भारतीय राजनीति के स्तंभ और भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा का 30 सितंबर, 2025 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली में निधन हो गया। वह 93 वर्ष के थे। प्रो. मल्होत्रा कई दिनों से एम्स में उम्र संबंधी बीमारियों के इलाज के लिए भर्ती थे।

प्रो. मल्होत्रा का सार्वजनिक जीवन छह दशकों से भी अधिक रहा। वह भाजपा एवं पूर्ववर्ती भारतीय जनसंघ के एक प्रमुख नेता रहे।

वह दिल्ली से पांच बार सांसद और दो बार विधानसभा सदस्य रहे। उन्होंने भाजपा, दिल्ली प्रदेश के प्रथम अध्यक्ष सहित पार्टी के कई प्रमुख पदों पर अपने दायित्व का निर्वहन किया। 2008 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में वह भाजपा के प्रस्तावित मुख्यमंत्री उम्मीदवार थे।

1999 के लोकसभा चुनावों में उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को दक्षिण दिल्ली से हराकर एक उल्लेखनीय जीत हासिल की थी। उन्होंने चुनावी राजनीति से इतर शिक्षा एवं खेल के क्षेत्रों में भी योगदान दिया। वह भारतीय तीरंदाजी संघ एवं अखिल भारतीय खेल परिषद् सहित अन्य संस्थाओं से जुड़े रहे।

वह जीवन भर संगठनात्मक कौशल, अनुशासन, सादगी, पार्टी विचारधारा को लेकर प्रतिबद्ध रहे और सार्वजनिक सेवा के लिए उनके जीवन को सदैव याद रखा जाएगा।

प्रो. मल्होत्रा के निधन पर सभी ने गहरा दुःख व्यक्त किया गया और दलगत राजनीति से उपर उठकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें जनता के मुद्दों की गहरी समझ रखने वाला एक 'उत्कृष्ट नेता' बताया

और दिल्ली में भाजपा को मजबूत करने में उनकी भूमिका की सराहना की। 'एक्स' पर एक पोस्ट में श्री मोदी ने लिखा—

"जीवनपर्यंत जनसेवा में समर्पित रहे भाजपा के वरिष्ठ नेता विजय कुमार मल्होत्रा जी के निधन से गहरा दुःख हुआ है। वे जमीन से जुड़े ऐसे नेता थे, जिन्हें जनता के मुद्दों की गहरी समझ थी। दिल्ली में पार्टी को सशक्त बनाने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। संसद में अपनी सक्रियता और योगदान के लिए भी वे सदैव याद किए जाएंगे। शोक की इस घड़ी में उनके परिवारजनों और शुभचिंतकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।"

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने उनके निधन को पार्टी के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया और उनकी सादगी, सत्यनिष्ठा एवं दृढ़ मार्गदर्शन को याद किया। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने जनसंघ के युग से लेकर अब तक संगठन को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने उनके निधन को एक अत्यंत दुःखद और अपूरणीय क्षति बताया और उनके जीवन को देशभक्ति, अनुशासन और संगठनात्मक कौशल का जीवंत उदाहरण बताया।

उनके पार्थिव शरीर को जनता के दर्शन के लिए दिल्ली भाजपा मुख्यालय में रखा गया, जहां हजारों भाजपा कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों एवं नागरिकों ने पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रो. मल्होत्रा का अंतिम संस्कार 1 अक्टूबर, 2025 को लोधी रोड श्मशान घाट, नई दिल्ली में पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया। अंतिम संस्कार समारोह में दिल्ली पुलिस द्वारा उन्हें सलामी दी गई, जो उनके प्रति सम्मान को दर्शाता है।

उनकी विद्वता, सिद्धांतनिष्ठ राजनीति, संगठनात्मक दृढ़ता और नैतिक आचरण राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक रहा है। ■

वीके मल्होत्रा जी को श्रद्धांजलि

नरेन्द्र मोदी

कुछ दिन पहले भारतीय जनता पार्टी परिवार ने अपने सबसे वरिष्ठ नेताओं में से एक श्री विजय कुमार मल्होत्रा जी को खो दिया। उन्होंने अपने जीवन में बहुत-सी उपलब्धियां हासिल कीं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण ये है कि उन्होंने कठोर परिश्रम, दृढ़ निश्चय और सेवा से भरा जीवन जिया। उनके जीवन को देखकर समझा जा सकता है कि आरएसएस, जनसंघ और भाजपा के मूल संस्कार क्या हैं। विपरीत परिस्थितियों में साहस का प्रदर्शन, स्वयं से ऊपर सेवा भावना, साथ ही राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, यह उनके व्यक्तित्व की बहुत बड़ी पहचान रही।

वीके मल्होत्रा जी के परिवार ने विभाजन का भयावह दौर झेला। उस आघात और विस्थापन ने उन्हें कड़वा या आत्मकेंद्रित नहीं बनाया। इसके बजाए, उन्होंने स्वयं को दूसरों की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्हें आरएसएस और जनसंघ की विचारधारा में राष्ट्रसेवा का रास्ता नजर आया। बंटवारे का वो समय बहुत चुनौतीपूर्ण था। मल्होत्रा जी ने सामाजिक कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उन्होंने उन हजारों विस्थापित परिवारों की मदद की, जिन्होंने सब कुछ खो दिया था। उनका जीवन संवारने और उन्हें फिर से खड़े होने में मदद की। यही जनसंघ की प्रेरणा थी। उन दिनों उनके साथी मदनलाल खुराना जी और केदारनाथ साहनी जी भी बढ़-चढ़कर सेवा कार्यों में शामिल होते थे। उन लोगों की निःस्वार्थ सेवा को आज भी दिल्ली के लोग याद करते हैं।

1967 के लोकसभा और कई राज्यों के विधानसभा चुनाव तब अपराजेय मानी जाने वाली कांग्रेस के लिए चौंकाने वाले रहे थे। इसकी बहुत चर्चा होती है, लेकिन एक कम चर्चित चुनाव भी हुआ। वो था, दिल्ली मेट्रोपॉलिटन काउंसिल का पहला चुनाव। राष्ट्रीय राजधानी में जनसंघ ने शानदार जीत दर्ज की। आडवाणी जी काउंसिल के चेयरमैन बने और मल्होत्रा जी को चीफ एग्जीक्यूटिव काउंसलर की जिम्मेदारी दी गई, जो मुख्यमंत्री के लगभग बराबर का पद था। तब उनकी उम्र केवल 36 वर्ष थी। उन्होंने अपने कार्यकाल को दिल्ली की जरूरतों, खासकर इंफ्रास्ट्रक्चर और लोगों से जुड़े मुद्दों पर फोकस किया।

इस जिम्मेदारी ने मल्होत्रा जी का दिल्ली से जुड़ाव और मजबूत कर दिया। जनहित से जुड़े हर मुद्दे पर मल्होत्रा जी सक्रिय रूप से जनता के साथ खड़े होते और उनकी आवाज बुलंद करते। उन्होंने 1960 के दशक में गौ रक्षा आंदोलन में भी हिस्सा लिया, जहां उनके साथ पुलिस की ज्यादतियां भी खूब हुईं। आपातकाल विरोधी आंदोलन में भी उनकी सक्रिय भागीदारी रही। दिल्ली की सड़कों पर जब सिखों का बेरहमी से कत्लेआम हो रहा था, तब वे शांति और सद्भावना की आवाज बनकर सिख समुदाय के साथ पूरी मजबूती से खड़े रहे। उनका मानना था कि राजनीति, चुनावी सफलता के अलावा सिद्धांतों, मूल्यों और लोगों की रक्षा के लिए भी है, जब उन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है।

1960 के दशक के उत्तरार्ध में वीके

मल्होत्रा जी ने सामाजिक कार्यों को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उन्होंने उन हजारों विस्थापित परिवारों की मदद की, जिन्होंने सब कुछ खो दिया था। उनका जीवन संवारने और उन्हें फिर से खड़े होने में मदद की। यही जनसंघ की प्रेरणा थी

अपने लंबे सेवाकाल में मल्होत्रा जी ने सिविक एडमिनिस्ट्रेशन संभाला, राज्य विधानसभा में भी पहुंचे और देश की संसद में भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। 1999 के लोकसभा चुनाव में डॉ. मनमोहन सिंह के खिलाफ उनकी शानदार जीत समर्थकों और विरोधियों के बीच आज भी याद की जाती है

मल्होत्रा जी सार्वजनिक जीवन का एक स्थायी चेहरा बन गए थे। बहुत कम नेता ऐसा दावा कर सकते हैं कि उनके पास लोगों के बीच रहकर काम करने का इतना लंबा और ठोस अनुभव है। वो एक अथक कार्यकर्ता, उत्कृष्ट संगठनकर्ता और एक संस्था निर्माता थे। उनमें चुनावी राजनीति और संगठनात्मक राजनीति, दोनों में समान रूप से सहजता के साथ काम करने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने जनसंघ और भाजपा की दिल्ली इकाई को स्थिर नेतृत्व दिया।

अपने लंबे सेवाकाल में मल्होत्रा जी ने सिविक एडमिनिस्ट्रेशन संभाला, राज्य विधानसभा में भी पहुंचे और देश की संसद में भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई। 1999 के लोकसभा चुनाव में डॉ. मनमोहन सिंह के खिलाफ उनकी शानदार जीत समर्थकों और विरोधियों के बीच आज भी याद की जाती है। ये एक बेहद हाई-प्रोफाइल चुनाव था। कांग्रेस की पूरी ताकत उनके दक्षिण दिल्ली क्षेत्र में उतर आई थी। लेकिन मल्होत्रा जी ने कभी बहस का स्तर नीचे नहीं किया। उन्होंने पॉजिटिव कैंपेन चलाया। गालियों और हमलों को नजरअंदाज किया और 50 प्रतिशत से ज्यादा वोटों के साथ जीत हासिल की। ये जीत सिर्फ प्रचार के दम पर नहीं मिली थी। ये जीत मल्होत्रा जी की जमीन पर मजबूत पकड़ की वजह से मिली थी। कार्यकर्ताओं से आत्मीय संबंध बनाकर रखने और मतदाताओं के मन की थाह लेने में वो माहिर थे।

मल्होत्रा जी संसद में सटीक तैयारी के साथ अपनी बात रखते थे। वो पूरी रिसर्च करके आते थे और प्रभावी ढंग से अपनी बात रखते थे। यूपीए-1 के दौरान विपक्ष के उपनेता के रूप में उन्होंने जिस तरीके से काम किया, वो राजनीति में आने वाले युवाओं के लिए एक मूल्यवान सबक की तरह है। उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उन्होंने भ्रष्टाचार और आतंकवाद को लेकर यूपीए सरकार का प्रभावी ढंग से विरोध किया। उन दिनों मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था और अक्सर मल्होत्रा जी से बातचीत होती। वो हमेशा गुजरात की विकास यात्रा के बारे में जानने को उत्सुक रहते थे।

राजनीति, वीके मल्होत्रा जी के व्यक्तित्व का केवल एक पहलू थी। वो एक उत्कृष्ट शिक्षाविद भी थे। उनके परिवार से मुझे पता चला कि उन्होंने स्कूल में डबल प्रमोशन हासिल किया। उन्होंने मैट्रिक और ग्रेजुएशन निर्धारित समय से पहले पूरी कर ली। उनकी हिंदी पर इतनी अच्छी पकड़ थी कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के भाषणों का हिंदी अनुवाद प्रायः वही करते थे।

उन्हें नई संस्थाएं और नई व्यवस्थाएं बनाने के लिए भी जाना जाता है। वे आरएसएस से जुड़ी कई संस्थाओं के संस्थापक और संरक्षक रहे। उनके प्रयासों से अनेक सांस्कृतिक, शैक्षिक और सामाजिक संस्थाओं का विकास हुआ और मार्गदर्शन मिला। इन संस्थाओं के माध्यम से कई प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन में बनी संस्थाएं प्रतिभा और सेवा की पाठशालाएं बनीं। उन्होंने एक ऐसे समाज का विजन दिया, जो आत्मनिर्भर हो और मूल्यों पर टिका हो।

मल्होत्रा जी ने राजनीति और अकादमिक जीवन से परे, खेल जगत में भी अमिट छाप छोड़ी। तीरंदाजी उनका गहरा शौक था और वो कई दशकों तक आर्चरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रहे। उनके नेतृत्व में भारतीय तीरंदाजी को ग्लोबल पहचान मिली। उन्होंने खिलाड़ियों को मंच और अवसर दिलाने के लिए निरंतर अथक प्रयास किए। खेल प्रशासन में भी उन्होंने वही गुण दिखाए जो सार्वजनिक जीवन में थे, यानी समर्पण, संगठन क्षमता और उत्कृष्टता की निरंतर खोज।

वी.के. मल्होत्रा जी को आज लोग उनके द्वारा संभाले गए पदों के साथ ही उनकी संवेदनशीलता के लिए भी याद कर रहे हैं। उनकी पहचान एक ऐसे व्यक्तित्व की रही, जो हमेशा लोगों की मुश्किलों में उनके साथ खड़े रहे। जहां भी मदद की जरूरत पड़ी, वहां उन्होंने खुद आगे बढ़कर योगदान दिया। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने दायित्वों से पीछे नहीं हटे। वे आदर्श पार्टी कार्यकर्ता थे, कभी ऐसा कुछ नहीं बोलते थे, जिससे हमारे कार्यकर्ताओं या विचारधारा को ठेस पहुंचे।

कुछ दिन पहले मैं दिल्ली भाजपा के नए मुख्यालय के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुआ था। वहां मैंने स्नेहपूर्वक श्री वीके मल्होत्रा जी को याद किया था। इस वर्ष तीन दशक बाद जब भाजपा ने दिल्ली में सरकार बनाई, तो वो बहुत उत्साहित थे। उनकी अपेक्षाएं बहुत बड़ी थीं, जिन्हें हम पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आने वाली पीढ़ियां उनके जीवन और उपलब्धियों से प्रेरणा पाती रहेंगी। ■

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता से होगा भारत विकसित

शिवप्रकाश

17 सितंबर को धार (मध्यप्रदेश) में आयोजित 'स्वस्थ नारी - सशक्त परिवार' अभियान प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर आयोजित विशाल जनसभा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से स्वदेशी अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने जनता से आग्रह किया कि "जो खरीदे वह देश में बना हो, जो खरीदे उसमें पसीना भारतीय का हो, जो खरीदे उसमें मिट्टी की महक हिन्दुस्तानी हो।" उन्होंने यह स्वदेशी का आह्वान केवल धार ही नहीं तो गत अनेक माह में अपने सार्वजनिक कार्यक्रम में किया है और स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के मंत्र को ही विकसित भारत की गारंटी बताया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के इस आह्वान से समस्त देशवासियों को जोड़ने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने 'विकसित भारत' अभियान की रूपरेखा बनाई है। यह अभियान पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के जन्म दिवस (25 सितंबर) से प्रारंभ होकर स्वदेशी के लिए प्रेरक महापुरुष महात्मा गांधी जी के जन्म दिवस (2 अक्टूबर) पर खादी खरीद के साथ भारतीय गौरव के प्रतीक स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिवस (25 दिसंबर) तक चलेगा। महात्मा गांधी जी ने स्वदेशी को परिभाषित करते हुए कहा था, "यह वह भावना है जो हमें आसपास की चीजों तथा सेवाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है। स्वदेशी का सार समीपस्थ की परिवार भाव से सेवा है।" पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी कहा था, "नीति ऐसी हो जो ग्राम आधारित उद्यमिता और स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता दें।" प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी भाषा के स्वाभिमान सहित परमाणु विस्फोट कर भारतीय स्वाभिमान को बहुगुणित कर दिया था। इस कालावधि में चलने वाला अभियान स्वदेशी के साथ समाज को जोड़ने की सार्थक पहल है।

मनुष्य को अत्यधिक सुख देने के नाम पर व्यक्ति अथवा राज्य को केंद्र मानकर चलने वाली पूंजीवादी, साम्यवादी एवं समाजवादी सभी व्यवस्थाओं के द्वारा निर्मित खतरे आज संपूर्ण विश्व में दिखाई दे रहे हैं। यह सभी व्यवस्थाएं केंद्रीकरण की पक्षधर एवं वर्ग संघर्ष को उत्पन्न करने वाली हैं। इनका आधार केवल भोग को बढ़ावा देता है। यह प्राकृतिक संसाधनों पर अपना अधिकार मानने के कारण प्रकृति का शोषण करती है, जिसके कारण पर्यावरण का संकट खड़ा हो रहा है। अल्प, अत्यधिक एवं बेमौसम वर्षा इसी प्रकृति के साथ खिलवाड़ का परिणाम है। एकाधिकारवादी मानसिकता के कारण अपने विरोधियों पर कब्जा करने के लिए टैरिफ अथवा युद्ध इन व्यवस्थाओं की देन हैं। विश्व को बाजार मानने के कारण इन व्यवस्थाओं ने मानव में प्रेम नहीं परस्पर संघर्ष उत्पन्न किया है। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत भी इस विदेशी चकाचौंध से प्रभावित होकर पश्चिम एवं साम्यवादी व्यवस्था की नकल पर चला है। यह चक्र यदि अधिक समय चला तो मानवता एवं विश्वशांति के सम्मुख व्यापक खतरा खड़ा होगा।

स्वदेशी विचार ग्राम केंद्रित छोटे-छोटे उद्योगों को विकसित करने का पक्षधर है। जिसमें रोजगार हो, पर्यावरण संरक्षण हो, कम ऊर्जा एवं पूंजी की आवश्यकता हो एवं परस्पर समाज संबंधों का निर्वहन हो। जिसको पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा, "अंत्योदय गरीब कल्याण की भावना यह है कि विकास का फल सबसे निचले स्तर तक पहुंचे। इसलिए लोकल उत्पाद का सशक्तीकरण नैतिक व आर्थिक आवश्यकता है।" ब्रिटिश हुकूमत के समय स्वदेशी आन्दोलन अंग्रेजों का विरोध एवं समाज को एकजुट करने का माध्यम बना। उस समय गणेशोत्सव, विदेशी वस्त्रों की होली एवं चरखा स्वदेशी के प्रतीक बने। आज जब हम स्वदेशी का विचार कर रहे हैं, तब हमारे उत्पाद वैश्विक स्तरीय बने। हमें उच्च

स्वदेशी विचार ग्राम केंद्रित छोटे-छोटे उद्योगों को विकसित करने का पक्षधर है। जिसमें रोजगार हो, पर्यावरण संरक्षण हो, कम ऊर्जा एवं पूंजी की आवश्यकता हो एवं परस्पर समाज संबंधों का निर्वहन हो। जिसको पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा, "अंत्योदय गरीब कल्याण की भावना यह है कि विकास का फल सबसे निचले स्तर तक पहुंचे। इसलिए लोकल उत्पाद का सशक्तीकरण नैतिक व आर्थिक आवश्यकता है।" ब्रिटिश हुकूमत के समय स्वदेशी आन्दोलन अंग्रेजों का विरोध एवं समाज को एकजुट करने का माध्यम बना। उस समय गणेशोत्सव, विदेशी वस्त्रों की होली एवं चरखा स्वदेशी के प्रतीक बने। आज जब हम स्वदेशी का विचार कर रहे हैं, तब हमारे उत्पाद वैश्विक स्तरीय बने

तकनीक का उपयोग करते हुए समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी मेधा को प्रकट करना है। विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा में भारतीय उत्पाद अग्रणीय बनाने होंगे।

आत्मनिर्भरता के इसी मंत्र को आधार बनाकर 2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने अनेक क्षेत्रों में सार्थक पहल की है। जिसका परिणाम आज केवल भारत ही नहीं दुनिया देख रही है। भारत सरकार की 'मेक इन इंडिया' तथा 'मेक फॉर इंडिया' नीति का ही परिणाम है कि रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता के संदेश के कारण आज हम ब्रह्मोस मिसाइल बना रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर में उसका परिणाम हम देख चुके हैं। अब हमारा रक्षा निर्यात लगभग 24,000 करोड़ का हो गया है। दुनिया के लगभग 100 देशों को हम अपने रक्षा उत्पाद बेच रहे हैं। सेमीकंडक्टर चिप बनाकर हमने सफलता का सोपान प्राप्त किया है। चंद्रयान व मंगलयान द्वारा अंतरिक्ष में हमारी पहुंच सभी को चौंकाने वाली है। एमएसएमई क्षेत्र का भारत की जीडीपी में 30% योगदान है। स्टार्टअप में भी हमने कीर्तिमान स्थापित किया है। वोकल फॉर लोकल को अपनाते हुए ओडीओपी के माध्यम से स्थानीय उत्पाद की विश्व बाजार में पहचान बनाई है। हम सैनिक एवं अर्धसैनिक बलों के उपयोग के लिए बुलेटप्रूफ जैकेट विदेश से मंगवाते थे अब 100 देशों को निर्यात कर रहे हैं। आज मोबाइल फ़ोन निर्माण के क्षेत्र में 2014-15 में 1566 करोड़ रुपए की तुलना में 2023-24 में 1,20,000 करोड़ रुपए का निर्यात हो गया है। जेनरिक दवाई वैक्सीन 2014 में 11 बिलियन डॉलर की तुलना में 24 बिलियन डॉलर पहुंच गई है। खिलौनों के क्षेत्र में चीन से निर्भरता समाप्त कर अब हम निर्यात कर रहे हैं। रेल के सभी पैरामीटर्स पर सक्षम कोच निर्माण कर हम 10 देशों को दे रहे हैं। 100 से अधिक देशों को जैविक उत्पाद निर्यात कर रहे हैं। यह कुछ उदाहरण हमारी प्रतिभा को प्रकट करते हैं एवं हमें यह विश्वास भी दिलाते है कि हममें करने का सामर्थ्य है।

लाल किले की प्राचीर से बोलते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आह्वान किया था कि हमें गुलामी की सभी प्रकार की मानसिकता से मुक्ति पानी है। स्वदेशी का संबंध केवल आर्थिकी तक ही सीमित नहीं है, हमें सभी क्षेत्रों जैसे भाषा, वेश-भूषा, परंपराएं एवं संस्कृति सभी के प्रति गौरव का भाव रखकर अपने जीवन में व्यवहार करना है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आह्वान करते हुए कहा था, "उपहार वही जो भारत में बना हो, पहनावा वही जो भारत में बुना हो, उत्सवों पर सजावट वही जो भारत में बने सामान से हो एवं रोशनी वही जो भारत में बनी झालरों से हो।" प्रधानमंत्री जी द्वारा इस आह्वान के आधार पर सामान्य समाज के व्यवहार से भारत के लोगों का रोजगार बढ़ेगा, विदेश की निर्भरता कम होगी, पूंजी भारत में रहेगी और भारत के विकास एवं गरीब कल्याण पर खर्च होगी। यही व्यवहार भारत की समृद्धि एवं विकसित भारत का शपथ पत्र होगा, समृद्धि आएगी एवं संस्कृति पोषित होगी। ■

लाल किले की प्राचीर से बोलते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आह्वान किया था कि हमें गुलामी की सभी प्रकार की मानसिकता से मुक्ति पानी है। स्वदेशी का संबंध केवल आर्थिकी तक ही सीमित नहीं है, हमें सभी क्षेत्रों जैसे भाषा, वेश-भूषा, परंपराएं एवं संस्कृति सभी के प्रति गौरव का भाव रखकर अपने जीवन में व्यवहार करना है। 'मन की बात' में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आह्वान करते हुए कहा था, "उपहार वही जो भारत में बना हो, पहनावा वही जो भारत में बुना हो, उत्सवों पर सजावट वही जो भारत में बने सामान से हो एवं रोशनी वही जो भारत में बनी झालरों से हो।"

लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन)हैं

प्रधानमंत्री ने सरकार के प्रमुख के रूप में 25वें वर्ष में प्रवेश करने पर लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सात अक्टूबर को सरकार के प्रमुख के रूप में अपनी सेवा के 25वें वर्ष में प्रवेश करते हुए भारत के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। वर्ष 2001 में आज ही के दिन गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद से अपनी यात्रा का स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि लोगों के जीवन को बेहतर बनाने और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने के लिए उनका निरंतर प्रयास रहा है।

श्री मोदी ने कहा कि उन्हें गुजरात के मुख्यमंत्री पद की ज़िम्मेदारी बेहद चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सौंपी गई थी। उस वर्ष राज्य भीषण भूकंप से जूझ रहा था और उससे पहले के वर्षों में राज्य को एक महाचक्रवात, लगातार सूखे और राजनीतिक अस्थिरता का भी सामना करना पड़ा था। उन्होंने कहा कि इन चुनौतियों ने लोगों की सेवा करने और नए उत्साह और आशा के साथ गुजरात के पुनर्निर्माण के संकल्प को और मज़बूत किया।

श्री मोदी को अपनी मां के शब्द याद आए

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते समय श्री मोदी को अपनी मां के वह शब्द याद आए कि उन्हें सदैव गरीबों के लिए कार्य करना चाहिए और कभी रिश्वत नहीं लेनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया था कि वे जो भी करेंगे, वह नेक इरादे से और कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति की सेवा करने के भाव से प्रेरित होगा।

गुजरात में अपने कार्यकाल पर विचार करते हुए श्री मोदी ने कहा कि उस समय लोगों को लग रहा था कि राज्य फिर कभी उन्नति नहीं कर पाएगा। किसान बिजली और पानी की कमी की शिकायत कर रहे थे, कृषि मंदी की चपेट में थी और औद्योगिक विकास ठप था। उन्होंने कहा कि सामूहिक प्रयासों से गुजरात सुशासन का केंद्र बन गया। कभी सूखाग्रस्त राज्य, कृषि में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला राज्य बन गया, व्यापार का विस्तार विनिर्माण और औद्योगिक क्षमताओं में हुआ और सामाजिक एवं भौतिक बुनियादी ढांचे को बढ़ावा मिला।

श्री मोदी ने कहा कि वर्ष 2013 में जब देश विश्वास और शासन के संकट से जूझ रहा था, उन्हें 2014 के लोकसभा चुनावों के लिए प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया गया था। उन्होंने कहा कि भारत की जनता ने उनके गठबंधन को प्रचंड बहुमत और उनकी पार्टी को पूर्ण बहुमत दिया, जिससे नए विश्वास और उद्देश्य के युग का सूत्रपात हुआ।

पिछले 11 वर्षों में भारत कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों का साक्षी बना

श्री मोदी ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में भारत कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों का साक्षी बना है। 25 करोड़ से ज़्यादा लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया है और देश प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक उज्ज्वल स्थान के रूप में उभरा है। उन्होंने कहा कि पूरे देश के लोगों, विशेषकर नारी शक्ति, युवा शक्ति और मेहनती अन्नदाताओं को अभूतपूर्व प्रयासों और सुधारों के माध्यम से सशक्त बनाया गया है।

श्री मोदी ने कहा कि आज लोकप्रिय भावना यह है कि भारत को सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाया जाए और यह 'गर्व से कहो, यह स्वदेशी है' के आह्वान में परिलक्षित होता है।

भारत की जनता के निरंतर विश्वास और स्नेह के लिए अपना आभार दोहराते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्र की सेवा करना सर्वोच्च सम्मान है। संविधान के मूल्यों से प्रेरित

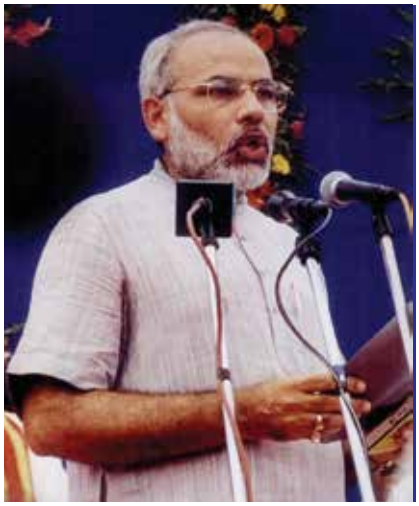

होकर उन्होंने विकसित भारत के सामूहिक स्वप्न को साकार करने के लिए और भी अधिक परिश्रम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

प्रधानमंत्री ने 'एक्स' पोस्ट की एक श्रृंखला में कहा;

"वर्ष 2001 में इसी दिन मैंने पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। देशवासियों के निरंतर आशीर्वाद से मैं सरकार के मुखिया के रूप में अपनी सेवा के 25वें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूं। भारत की जनता के प्रति मेरी कृतज्ञता। इन सभी वर्षों में मेरा निरंतर प्रयास रहा है कि हम अपने लोगों के जीवन को बेहतर बनाएं और इस महान राष्ट्र की प्रगति में योगदान दें, जिसने हम सभी का पालन-पोषण किया है।"

"मेरी पार्टी ने मुझे बेहद चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में गुजरात के मुख्यमंत्री पद की ज़िम्मेदारी सौंपी थी। उस वर्ष राज्य एक भीषण भूकंप से जूझ रहा था। पिछले वर्षों में एक महाचक्रवात, लगातार सूखा और राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति थी। इन चुनौतियों ने जनता की सेवा करने और नए उत्साह और

आशा के साथ गुजरात के पुनर्निर्माण के संकल्प को और मज़बूत किया।"

"जब मैंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी, मुझे याद है कि मेरी मां ने मुझसे कहा था— मुझे तुम्हारे काम की ज़्यादा समझ नहीं है, लेकिन मैं सिर्फ़ दो चीज़ें चाहती हूं। पहला, तुम सदैव गरीबों के लिए काम करोगे और दूसरा, तुम कभी रिश्वत नहीं लोगे। मैंने लोगों से यह भी कहा था कि मैं जो भी करूंगा, नेक इरादे से करूंगा और कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति की सेवा करने के दृष्टिकोण से प्रेरित रहूंगा।"

"ये 25 वर्ष कई अनुभवों से परिपूर्ण रहे हैं। साथ मिलकर हमने उल्लेखनीय प्रगति की है। मुझे आज भी याद है कि जब मैंने मुख्यमंत्री का पद संभाला था, तब ऐसा माना जाता था कि गुजरात फिर कभी उन्नति नहीं कर पाएगा। किसानों समेत आम नागरिक बिजली और पानी की कमी की शिकायत करते थे। कृषि मंदी की चपेट में थी और औद्योगिक विकास ठप था। तब से हम सभी ने मिलकर गुजरात को सुशासन का केंद्र बनाने के लिए काम किया।"

"सूखा-प्रवण राज्य गुजरात, कृषि के क्षेत्र में शीर्ष प्रदर्शन करने वाला राज्य बन गया। व्यापार की संस्कृति का विस्तार मज़बूत औद्योगिक और विनिर्माण क्षमताओं में हुआ। नियमित कर्फ्यू अब अतीत की बात हो गई। सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे को बढ़ावा मिला। इन परिणामों को प्राप्त करने के लिए लोगों के साथ मिलकर काम करना बहुत संतोषजनक रहा।"

तत्कालीन यूपीए सरकार भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और नीतिगत पंगुता के सबसे बुरे रूप का पर्याय

श्री मोदी ने सिलसिलेवार 'एक्स' पोस्ट में कहा, "वर्ष 2013 में मुझे 2014 के लोकसभा चुनावों के लिए प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। उन दिनों देश विश्वास और शासन के संकट से जूझ रहा था। तत्कालीन यूपीए सरकार भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और नीतिगत पंगुता के सबसे बुरे रूप का पर्याय बन चुकी थी। भारत को वैश्विक व्यवस्था में एक कमज़ोर कड़ी के

रूप में देखा जा रहा था, लेकिन भारत की जनता की सूझबूझ ने हमारे गठबंधन को प्रचंड बहुमत दिलाया और यह भी सुनिश्चित किया कि हमारी पार्टी को तीन दशकों के बाद पहली बार पूर्ण बहुमत मिले।"

"पिछले 11 वर्षों में हम भारत के लोगों ने मिलकर काम किया है और कई महत्वपूर्ण बदलाव हासिल किए हैं। हमारे अभूतपूर्व प्रयासों ने पूरे भारत के लोगों, विशेषकर हमारी नारी शक्ति, युवा शक्ति और मेहनती अन्नदाताओं को सशक्त बनाया है। 25 करोड़ से ज़्यादा लोगों को गरीबी के चंगुल से निकाला गया है। भारत को प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में एक उज्ज्वल स्थान के रूप में देखा जा रहा है। हमारे यहां दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में से एक है। हमारे किसान नवाचार कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि हमारा राष्ट्र आत्मनिर्भर हो। हमने व्यापक सुधार किए हैं और आम भावना सभी क्षेत्रों में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की है और यह 'गर्व से कहो, यह स्वदेशी है' के आह्वान में परिलक्षित होती है।"

"मैं एक बार फिर भारत की जनता को उनके निरंतर विश्वास और स्नेह के लिए धन्यवाद देता हूं। अपने प्रिय राष्ट्र की सेवा करना सर्वोच्च सम्मान है, एक ऐसा कर्तव्य जो मुझे कृतज्ञता और उद्देश्य से भर देता है। हमारे संविधान के मूल्यों को अपना निरंतर मार्गदर्शक मानते हुए मैं आने वाले समय में विकसित भारत के हमारे सामूहिक स्वप्न को साकार करने के लिए और भी अधिक परिश्रम करूंगा।" ■

स्वस्थ भारत की आशा के सात साल

जगत प्रकाश नड्डा

जब 2018 में रांची से आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की शुरुआत हुई, तो इसने स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच के एक नए युग की शुरुआत की। इसने कमज़ोर परिवारों को 5 लाख रुपये का वार्षिक स्वास्थ्य कवर प्रदान किया और पूरे देश में कैशलेस, पेपरलेस उपचार को संभव बनाया। मुझे आज भी उस दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ये शब्द याद हैं: 'देश में किसी को भी केवल इसलिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा से वंचित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे इसे वहन नहीं कर सकते।'

हमने प्रधानमंत्री के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण को साकार करने में अभूतपूर्व प्रगति की है। इस छोटी सी अवधि में,यह योजना देश भर में हमारे सबसे वंचित भाइयों और बहनों की जीवन रेखा बन गई है। यह योजना पश्चिम बंगाल को छोड़कर, पूरे देश में लागू की जा रही है। अगस्त 2025 तक, 10.30 करोड़ से अधिक अस्पतालों में भर्ती होने की अनुमति दी जा चुकी है, जिससे कैशलेस देखभाल और जेब से की जाने वाली बचत में 1.48 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बचत हुई है।

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना का प्रभाव गहरा है। एक दशक पहले परिवार चिकित्सा देखभाल के लिए लगभग पूरी तरह से अपनी जेब से भुगतान करते थे, और आज यह बोझ तेजी से कम हुआ है, क्योंकि लगभग 61 करोड़ लोग आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत सुरक्षित हैं।

दशकीय जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखते हुए 2022 में लाभार्थी आधार बढ़कर 12 करोड़ परिवारों तक पहुंच गया। मार्च, 2024 में आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों को जोड़ा गया और अक्टूबर, 2024 से 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को आयुष्मान वय वंदना कार्ड के माध्यम से आय की परवाह किए बिना कवर किया गया।

इसके अतिरिक्त, लगभग एक करोड़ गिग और प्लेटफ़ॉर्म कर्मचारियों को इस योजना के अंतर्गत शामिल किया जा रहा है, जिससे इस परिवर्तनकारी स्वास्थ्य सेवा पहल की पहुंच और व्यापक हो रही है। इस योजना ने न केवल वित्तीय राहत प्रदान की है, बल्कि विशेष रूप से बुजुर्गों और जमीनी स्तर के स्वास्थ्य कर्मचारियों, जिनकी सेवाओं को औपचारिक रूप से मान्यता दी गई है, के लिए सम्मान और आत्मविश्वास भी बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न केंद्रीय और राज्य स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के आयुष्मान भारत के साथ एकीकरण से दक्षता में सुधार हुआ है, दोहराव कम हुआ है और यह सुनिश्चित हुआ है कि लाभ लोगों तक सरल और अधिक पारदर्शी तरीके से पहुंचें।

> **एक दशक पहले परिवार चिकित्सा देखभाल के लिए लगभग पूरी तरह से अपनी जेब से भुगतान करते थे, और आज यह बोझ तेजी से कम हुआ है, क्योंकि लगभग 61 करोड़ लोग आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत सुरक्षित हैं**

वित्तीय सुरक्षा और योजना की बेहतर दक्षता के अलावा, आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई का प्रभाव अब मापने योग्य स्वास्थ्य परिणामों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। लैंसेट रीजनल हेल्थ के एक अध्ययन में बताया गया है कि एबी पीएम-जेएवाई लाभार्थियों के लिए निदान के 30 दिनों के भीतर कैंसर का इलाज समय पर शुरू होने में 90 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो वित्तीय बाधाओं के दूर होने के बाद पहले पहुंच को रेखांकित करता है। आज, पहुंच समय पर, सस्ती और जीवन रक्षक है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 में पाया गया कि इस योजना को अपनाने वाले राज्यों में, न अपनाने वाले राज्यों की तुलना में शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) और 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर (यू5एमआर) में अधिक गिरावट पाई गई। यह साबित करता है कि यह योजना केवल एक वित्तीय सुरक्षा नहीं है, बल्कि एक सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप है जो जीवन बचाता है।

आयुष्मान भारत ने हमारे सबसे जरूरतमंद नागरिकों के लिए न केवल सरकारी अस्पतालों, बल्कि कुछ बेहतरीन निजी अस्पतालों के भी दरवाजे खोल दिए हैं। इस योजना में 32,913 से ज्यादा अस्पताल शामिल हैं, जिनमें 15,103 से ज्यादा निजी अस्पताल शामिल हैं, जो संतुलित सार्वजनिक-निजी भागीदारी को दर्शाता है। बढ़ता नेटवर्क सार्वजनिक और निजी, दोनों तरह की भागीदारी के जरिए वंचित क्षेत्रों में पहुंच को और मजबूत करता है।

इस परिवर्तन की उत्पत्ति माननीय प्रधानमंत्री की दृष्टि में निहित है। 2016 में जब मैं केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री था, तो मुझे जेनेवा में विश्व स्वास्थ्य संगठन की कार्यकारी बोर्ड की अध्यक्षता करने का सौभाग्य मिला। सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज चर्चाओं का प्रमुख विषय था, और मैं अक्सर यह सोचता था कि भारत,

अपनी विशालता और जटिलता के साथ, इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से प्रेरित होकर, हम पीएम-जेएवाई को तैयार कर पाए। प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से हर विवरण पर चर्चा करने में समय लगाया और हमने योजना को कैबिनेट द्वारा अनुमोदित और 2018 में लॉन्च होने से पहले इसे और बेहतर बनाने में कई देर शामें बिताईं। लॉन्च के बाद भी वे इसमें पूरी तरह से लगे रहे। देश भर में अपनी यात्राओं के दौरान वे अक्सर आयुष्मान भारत के लाभार्थियों से मिलते थे और आगे के सुधारों के लिए उनके सुझावों का लाभ उठाते थे। उनके निरंतर मार्गदर्शन और नेतृत्व ने इस योजना को एक विचार से एक सच्चे राष्ट्रीय आंदोलन में बदल दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से प्रेरित होकर, हम पीएम-जेएवाई को तैयार कर पाए। प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत रूप से हर विवरण पर चर्चा करने में समय लगाया और हमने योजना को कैबिनेट द्वारा अनुमोदित और 2018 में लॉन्च होने से पहले इसे और बेहतर बनाने में कई देर शामें बिताईं। लॉन्च के बाद भी वे इसमें पूरी तरह से लगे रहे। देश भर में अपनी यात्राओं के दौरान वे अक्सर आयुष्मान भारत के लाभार्थियों से मिलते थे और आगे के सुधारों के लिए उनके सुझावों का लाभ उठाते थे

सात साल बाद आयुष्मान भारत दुनिया का सबसे बड़ा स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम बनकर उभरा है। फिर भी, यह यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है। मुझे उम्मीद है कि पश्चिम बंगाल भी जल्द ही इसमें शामिल हो जाएगा, ताकि उसके लोग भी इसका लाभ उठा सकें। हमारी एक अन्य प्राथमिकता आयुष्मान भारत को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के साथ और अधिक घनिष्ठ रूप से एकीकृत करना है, रेफरल को मजबूत करना, डिजिटल रिकॉर्ड को दीर्घकालिक रूप से जोड़ना और प्लेटफॉर्म द्वारा सक्षम फॉलो-अप।

आयुष्मान भारत के सात वर्ष पूरे होने पर हम अब तक की उपलब्धियों पर गर्व कर सकते हैं। लेकिन हमें यहीं नहीं रुकना चाहिए। हमारा लक्ष्य एक ऐसा भविष्य है जहां हर भारतीय, चाहे उसकी आय या भूगोल कुछ भी हो, उच्च-गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा तक समान पहुंच प्राप्त कर सके। यह केवल नीतिगत नहीं, बल्कि न्याय का भी विषय है। कार्य बहुत बड़ा है, लेकिन हमारा संकल्प दृढ़ है। आयुष्मान भारत एक योजना से कहीं बढ़कर है; यह एक वादा है कि बीमारी परिवारों को निराशा में नहीं धकेलेगी। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री हैं)

आरएसएस: सेवा, त्याग और राष्ट्र निर्माण की शताब्दी यात्रा

राजनाथ सिंह

27 सितंबर, 1925 को जब डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना की थी, तब शायद ही किसी ने ऐसा सोचा होगा कि आगामी सौ वर्षों में यह संगठन इतना विशाल और प्रभावशाली बन जाएगा। बीते दस दशकों में आरएसएस ने भारत की सामाजिक बुनियाद को मजबूत किया है, उसकी संप्रभुता की रक्षा की है, कमजोर वर्गों को सशक्त बनाया है और भारतीय सभ्यता के मूल्यों को संजोए रखा है। वर्तमान में आरएसएस निःस्वार्थ सेवा का जीवंत प्रतीक बन गया है। आरएसएस के शताब्दी उत्सव के अवसर पर उसकी यात्रा को पुनः याद करना उचित भी है और आवश्यक भी।

हाल ही में दिल्ली में हुए एक कार्यक्रम में सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने संघ के समावेशी विचारों पर चर्चा करते हुए कहा "धर्म व्यक्तिगत पसंद का विषय है; इसमें किसी तरह का प्रलोभन या जोर-जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।" यह वक्तव्य संघ की मूल विचारधारा को प्रतिबिंबित करता है कि समाज में टकराव नहीं, सामंजस्य हो ; बिखराव नहीं, एकता हो और केवल भौतिक वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि जीवन की सार्थकता पर बल हो। आज भी संघ की दैनिक शाखाएं और स्वयंसेवकों द्वारा चलाए गए कार्यक्रम; अनुशासन, आत्मबल और भारतीय संस्कृति पर गर्व करने की प्रेरणा देते हैं जिससे श्रेष्ठ भारत के निर्माण का मार्ग सुगम होता हैं।

इसलिए यह अत्यंत स्वाभाविक बात है कि संघ के अनुकरणीय योगदान के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से संघ को 'दुनिया का सबसे बड़ा गैर-सरकारी संगठन' बताया और देशवासियों को संघ की सौ साल की भव्य, प्रेरणादायक और समर्पित यात्रा के बारे में याद दिलाया।

वर्ष 1947 में जब भारत स्वतंत्रता का उत्सव माना रहा था तब विभाजन की त्रासदी की वजह से बहुत जनहानि हुई थी और लाखों लोगों को अपने घरों से विस्थापित होना पड़ा था। ऐसी भीषण परिस्थिति में आरएसएस के स्वयंसेवक एक अनुशासित, संगठित और निःस्वार्थ सेवकों के रूप में सामने आए। उन्होंने हिंसा से प्रभावित लोगों को सुरक्षा प्रदान करने और चिकित्सा उपलब्ध कराने के साथ विस्थापित लोगों के पुनर्वास में अनन्य योगदान दिया। विभाजन से पहले भी आरएसएस के दूसरे सरसंघचालक श्री गुरुजी (एम.एस. गोलवलकर) और संघ के कई वरिष्ठ नेताओं ने पंजाब के विभिन्न हिंसाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया था और उन्होंने वहां के लोगों को आत्मरक्षा और राहत कार्यों के लिए संगठित किया था। इस दौरान संघ की भूमिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि तत्कालीन हालात से घबराये कांग्रेसी नेताओं को भी अपने परिवारों और समुदाय की रक्षा के लिए संघ की मदद लेनी पड़ी थी। स्वयंसेवकों की सेवा के कारण ही द् ट्रिब्यून अख़बार ने अपनी एक रिपोर्ट में आरएसएस को 'द् स्वार्ड आर्म ऑफ पंजाब' कहा था।

> **भारत के एकीकरण में संघ के योगदान से भी बहुत लोग अवगत नहीं हैं। कश्मीर से गोवा और दादरा नगर हवेली तक, संघ ने भारत की अखंडता को बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाई है**

संघ द्वारा समाज-सेवा का कार्य विभाजन के बाद भी अनवरत जारी रहा। 1984 में जब सिख विरोधी दंगे भड़काए गए और हजारों सिखों की हत्या की गई, तब भी संघ स्वयंसेवक सिखों की रक्षा और राहत कार्यों के लिए सबसे आगे थे। लेखक खुशवंत सिंह ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा है कि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद में हिंदू-सिख एकता बनाए रखने में आरएसएस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संघ के कार्यों को देखकर यह बात आसानी से कही जा सकती है कि कुछ लोगों द्वारा आरएसएस पर बहुसंख्यकवादी संगठन होने का आरोप लगाना बिल्कुल निराधार और गलत है। स्वतंत्रता के समय भी संघ ने भारत के अल्पसंख्यकों और उनके पूजा स्थलों की रक्षा में मदद की थी। मार्च 1947 में, जब मुस्लिम लीग द्वारा उकसाई गई भीड़ श्री हरमंदिर साहिब की ओर बढ़ी, तो तलवारों और लाठियों से लैस आरएसएस के स्वयंसेवकों ने न केवल उसका सामना किया बल्कि उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया था। तीन दिन बाद, जब एक और सुनियोजित हमला श्री हरमंदिर साहिब पर करने का प्रयास किया गया था, तब आरएसएस के स्वयंसेवकों ने एक मानव घेरा बनाकर गुरुद्वारे की रक्षा की थी और हमलावरों को सफलतापूर्वक खदेड़ भगाया था।

भारत के एकीकरण में संघ के योगदान से भी बहुत लोग अवगत नहीं हैं। कश्मीर से गोवा और दादरा नगर हवेली तक, संघ ने भारत की

अखंडता को बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाई है। जब पाकिस्तान समर्थित कबायली हमलावरों ने जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण किया, तो सरदार वल्लभभाई पटेल ने महाराजा हरि सिंह को विलय के लिए राजी करने हेतु श्री गुरुजी की मदद मांगी थी। इसके बाद श्री गुरुजी श्रीनगर गए और उन्होंने हरि सिंह को तत्काल विलय करने के लिए मनाने का प्रयास किया था। आरएसएस स्वयंसेवकों ने 1947-48 के युद्ध के दौरान सेना की सहायता भी की थी। साथ ही, मीरपुर और मुजफ्फराबाद जैसे क्षेत्रों से भाग रहे शरणार्थियों के लिए राहत कार्यों की व्यवस्था भी संभाली थी।

1954 में स्वयंसेवकों ने दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने में अग्रणी भूमिका निभाई। के.आर. मलकानी की पुस्तक 'दी आरएसएस स्टोरी' के अनुसार— "2 अगस्त, 1954 को लगभग 200 आरएसएस स्वयंसेवकों ने, नाना काजरेकर और सुधीर फड़के के नेतृत्व में दादरा और नगर हवेली को आज़ाद कराया। उन्होंने राइफ़ल, ब्रेन गन और स्टेन गन से लैस 175 पुर्तगाली सैनिकों को खदेड़ दिया।" इसी तरह गोवा की आज़ादी के लिए आरएसएस ने भूमिगत स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लिया था। पुर्तगाली सैनिकों की गोलीबारी में कई स्वयंसेवकों ने अपने प्राण न्योछावर भी किए। उनका बलिदान गोवा के भारत-विलय में निर्णायक साबित हुआ।

इस प्रकार, आरएसएस ने हमेशा भारत को मजबूत करने के लिए कार्य किया है। 1975 के दौरान संघ ने आपातकाल का मज़बूती से विरोध किया था। इसके खिलाफ लाखों स्वयंसेवक संगठित होकर भारत के संविधान की रक्षा के लिए खड़े हो गए। जनवरी, 1976 में द् इकोनॉमिस्ट ने अपनी एक रिपोर्ट में लिखा था —"इस आंदोलन की मुख्य ताक़त जनसंघ और उससे जुड़ा संगठन आरएसएस है।"

यह वह समय था, जब लोगों और संस्थाओ को केवल झुकने को कहा जाता था तो वे रेंगने के लिए तैयार थे। इन परिस्थितियों में आरएसएस ने अपने दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। उसके असंख्य कार्यकर्ता तानाशाही के ख़िलाफ़ बिना डरे खड़े हुए और लोगों को एक लोकतांत्रिक विकल्प प्रदान करने के लिए काम किया। यह संघ के लोकतंत्र के प्रति संकल्प का प्रमाण है।

आरएसएस संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है। वनवासी और हाशिए के समुदायों के उत्थान के लिए आरएसएस के द्वारा किए जा रहे कार्यों से यह बात पूर्णतया सिद्ध होती है। वर्ष 1952 में स्थापित अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम आज देश का सबसे बड़ा आदिवासी कल्याण संगठन है। वर्तमान में यह संगठन देश के 323 ज़िलों की लगभग 52,000 बस्तियों और गांवों में 20,000 से अधिक परियोजनाएं चला रहा है। इन परियोजनाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कौशल विकास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण जैसी गतिविधियां शामिल हैं। आरएसएस का दृष्टिकोण हमेशा वनवासी समाज को उनकी पहचान के साथ राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने और उनका आत्मगौरव बढ़ाने का रहा है।

30 जनवरी, 1948 को गांधीजी की हत्या के बाद आरएसएस ने श्रद्धांजलि स्वरूप अपनी सभी शाखाएं 13 दिनों के लिए स्थगित कर दी थीं। ऐसा संघ के इतिहास में सिर्फ एक बार हुआ है

आरएसएस को महात्मा गांधी जी के नाम पर भी अक्सर निशाना बनाया जाता है। हालांकि महात्मा गांधी और आरएसएस के बीच कुछ वैचारिक मतभेद अवश्य रहे, लेकिन कभी मनभेद या वैमनस्य का भाव नहीं रहा।। महात्मा गांधी ने कई अवसरों पर संघ के अनुशासन और राष्ट्र सेवा की प्रशंसा की है। वर्ष 1934 में गांधीजी ने वर्धा में आरएसएस के एक शिविर का दौरा भी किया था जहां उन्होंने संघ के 'अनुशासन, अस्पृश्यता के पूर्ण अभाव और उच्च सादगी' की सराहना की थी। विभाजन की त्रासदी के दौरान, 16 सितंबर 1947, को गांधीजी ने दिल्ली में आरएसएस की एक सभा को संबोधित किया था। इस दौरान उन्होंने संघ की सेवा एवं बलिदान की भावना की प्रशंसा की थी। 30 जनवरी, 1948 को गांधीजी की हत्या के बाद आरएसएस ने श्रद्धांजलि स्वरूप अपनी सभी शाखाएं 13 दिनों के लिए स्थगित कर दी थीं। ऐसा संघ के इतिहास में सिर्फ एक बार हुआ है। यह बातें दोनों की ओर से एक दूसरे के प्रति पारस्परिक सम्मान होने की गवाही देती हैं।

इस प्रकार, आरएसएस ने विचारों की विविधता का हमेशा सम्मान किया है। यह बात संघ के देशव्यापी और खासकर पूर्वोत्तर भारत में किए जा रहे कार्यों से भी प्रदर्शित होती है। उपनिवेशवाद के दौरान हुए कुशासन और आजादी के बाद नीतिगत उपेक्षा के कारण पूर्वोत्तर भारत और वहां के लोग अलगाववाद और उग्रवाद से जूझते रहे। लेकिन आरएसएस ने 1946 में गुवाहाटी में पहली शाखा स्थापित की और तब से इस क्षेत्र को राष्ट्रीय धारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बहुत सी चुनौतियों के बीच, यहां संघ ने विद्यालयों, स्वास्थ्य शिविरों, आपदा राहत कार्यों और सामुदायिक निर्माण जैसे कार्यों के ज़रिए सामाजिक पूंजी को बढ़ाया है और लोगों के बीच विश्वास कायम किया है।

आज जब आरएसएस एक सदी की सफल यात्रा पूर्ण कर रहा है, यह बात कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राष्ट्र निर्माण में उसका योगदान अप्रतिम और अतुलनीय है। कोविड-19 महामारी के दौरान भी संघ और उसके स्वयंसेवकों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए मई, 2021 में लगभग 300 स्वयंसेवकों ने कोलार में लंबे समय से बंद पड़े एक अस्पताल को मात्र दो सप्ताह में फिर से शुरू किया जिससे अनेक लोगों को अत्यंत आवश्यक राहत मिली। ऐसे कार्य दर्शाते हैं कि एक सदी बाद भी आरएसएस उसी भाव और समर्पण के साथ मानवता और देश की सेवा कर रहा है, जिसके साथ इसकी नींव एक शताब्दी पहले रखी गई थी। ■

(लेखक भारत के रक्षा मंत्री हैं)

केन्द्रीय गृह मंत्री ने नई दिल्ली में 'नक्सल मुक्त भारत' के समापन सत्र को संबोधित किया

भारत 31 मार्च, 2026 तक नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा: अमित शाह

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 28 सितंबर को नई दिल्ली में 'भारत मंथन-2025: नक्सल मुक्त भारत, पीएम मोदी के नेतृत्व में लाल आतंक का खात्मा' के समापन सत्र को संबोधित किया। इस अवसर पर केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि 31 मार्च, 2026 तक भारत नक्सलवाद से मुक्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक भारतीय समाज नक्सलवाद का वैचारिक पोषण, कानून समर्थन और वित्तीय पोषण करने वाले लोगों को समझ नहीं लेता तब तक नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई समाप्त नहीं होगी।

श्री शाह ने कहा कि आंतरिक सुरक्षा और देश की सीमाओं की सुरक्षा हमेशा से हमारी विचारधारा का प्रमुख अंग रही है। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी के मूल उद्देश्यों में तीन चीज़ें बहुत प्रमुख थीं— देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय संस्कृति के सभी अंगों का पुनरूत्थान। केन्द्रीय गृह मंत्री ने 1960 के दशक से अब तक, वामपंथी हिंसा में जिन लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी, जिन्होंने अपनों को खोया, शारीरिक व मानसिक विपदाएं झेलीं है उन सभी लोगों को नमन किया।

श्री अमित शाह ने कहा कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सत्ता संभाली तब देश की आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से तीन महत्वपूर्ण हॉटस्पॉट— जम्मू-कश्मीर, नॉर्थ-ईस्ट और वामपंथी कॉरिडोर ने देश की आंतरिक सुरक्षा को छिन्न-भिन्न करके रखा था। उन्होंने कहा कि लगभग 4-5 दशकों से हज़ारों लोग इन तीनों जगहों पर पनपी और फैली अशांति के कारण जान गंवा चुके थे, संपत्ति का बहुत नुकसान हुआ था, देश के बजट का बहुत बड़ा हिस्सा गरीबों के विकास की जगह इन हॉटस्पॉट को संभालने में जाता था और सुरक्षा बलों की भी अपार जानहानि हुई थी। श्री शाह ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही इन तीनों हॉटस्पॉट पर ध्यान केन्द्रित किया गया और स्पष्ट दीर्घकालीन रणनीति के आधार पर काम हुआ।

1971 में स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे ज़्यादा 3620 हिंसक घटनाएं हुईं

केन्द्रीय गृह ने कहा कि मोदी सरकार के 10 साल के कार्यकाल में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि लगभग 70 के दशक की शुरुआत में नक्सलवाद और हथियारी विद्रोह की शुरुआत हुई। 1971 में स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे ज़्यादा 3620 हिंसक घटनाएं हुईं और इसके बाद 80 के दशक में पीपल्स वॉर ग्रुप ने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, झारखंड बिहार और केरल तक इसका विस्तार किया। श्री शाह ने कहा कि 80 के दशक के बाद वामपंथी गुटों ने एक दूसरे में विलय

की शुरुआत की और 2004 में प्रमुख सीपीआई (माओवादी) गुट का गठन हुआ और नक्सली हिंसा ने बहुत गंभीर स्वरूप ले लिया। उन्होंने कहा कि पशुपति से तिरुपति कॉरिडोर को रेड कॉरिडोर के रूप में जाना जाता था।

श्री अमित शाह ने कहा कि देश के भूभाग का 17 प्रतिशत हिस्सा रेड कॉरिडोर में समाहित था और इस समस्या से 12 करोड़ की आबादी प्रभावित थी। उस वक्त की आबादी का 10 प्रतिशत हिस्सा नक्सलवाद का दंश झेलकर अपना जीवन बिता रहा था। श्री शाह ने कहा उसकी तुलना में दो अन्य हॉटस्पॉट– कश्मीर में 1 प्रतिशत भूभाग आतंकवाद और पूर्वोत्तर में देश का 3.3. प्रतिशत भूभाग अशांति से ग्रस्त था। उन्होंने कहा कि जब 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री बने तब मोदी सरकार ने संवाद, सुरक्षा और समन्वय के तीनों पहलुओं पर काम करने की शुरुआत की। इसके परिणामस्वरूप 31 मार्च, 2026 को इस देश से हथियारी नक्सलवाद समाप्त हो

जाएगा।

श्री शाह ने कहा कि पहली बार भारत सरकार ने बिना किसी कन्फ्यूज़न के एक स्पष्ट नीति अपनाई। उन्होंने कहा कि राज्य पुलिस और केन्द्रीय सुरक्षाबलों को हमने छूट दी और इंटेलिजेंस, इन्फॉर्मेशन शेयरिंग तथा ऑपरेशन में कोऑर्डिनेशन के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों के बीच एक व्यावहारिक सेतु बनाया गया। श्री शाह ने कहा कि आर्म्स और अम्युनिशन की सप्लाई पर नकेल कसी गई। 2019 के बाद हमें उनकी सप्लाई को लगभग 90 प्रतिशत से अधिक रोकेने में सफलता प्राप्त हुई है।

2004-14 के मुकाबले 2014-24 में सुरक्षाबलों की मृत्यु में 73 प्रतिशत की कमी

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि 2019 के बाद हमने राज्यों के क्षमता निर्माण पर भी बल दिया। SRE और SIS योजना के तहत लगभग 3331 करोड़ रुपये जारी किए गए, जो लगभग 55 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। इसके माध्यम से फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बढ़ाए गए और इस पर लगभग 1741 करोड़ रुपये खर्च हुए। उन्होंने कहा कि पिछले 6 साल में 336 नए सीएपीएफ के कैंप बनाकर सुरक्षा के वैक्यूम को भरने का काम मोदी सरकार ने किया। इसके परिणामस्वरूप 2004-14 के मुकाबले 2014-24 में सुरक्षाबलों की मृत्यु में 73 प्रतिशत की कमी आई और नागरिकों की मृत्यु में 74 प्रतिशत कमी आई।

श्री शाह ने कहा कि पहले हमें छत्तीसगढ़ में सफलता नहीं मिलती थी, क्योंकि वहां विपक्ष की सरकार थी। 2024 में हमारी सरकार बनी और 2024 में किसी एक साल में सबसे अधिक 290 नक्सलियों को न्यूट्रलाइज़ करने का काम किया गया। गृह मंत्री ने कहा कि हम किसी को नहीं मारना चाहते। 290 न्यूट्रलाइज़्ड नक्सलियों के मुकाबले 1090 गिरफ्तार किए और 881 ने सरेंडर किया। उन्होंने कहा कि यह बताता है कि सरकार की अप्रोच क्या है। हम पूरा प्रयास करते हैं कि नक्सली को सरेंडर या अरेस्ट करने का पूरा मौका दिया जाता है।

श्री शाह ने कहा कि 2025 में अब तक 270 नक्सलियों को न्यूट्रलाइज़ किया गया है, 680 गिरफ्तार किए गए हैं और 1225 ने आत्मसमर्पण किया है। दोनों वर्षों में आत्मसमर्पण और अरेस्ट की संख्या न्यूट्रलाइज़्ड की संख्या से अधिक है। आत्मसमर्पण करने वालों की संख्या बताती है कि नक्सलियों का समय अब बहुत कम बचा है।

2014 में 126 नक्सलाइट ज़िले थे, अब 18 नक्सलाइट ज़िले ही बचे हैं

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि 1960 से 2014 तक कुल 66 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन थे और मोदी सरकार के 10 साल में नए 576 फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन बनाने का काम हुआ। 2014 में 126 नक्सलाइट ज़िले थे, अब 18 नक्सलाइट ज़िले ही बचे हैं। मोस्ट अफेक्टेड ज़िले 36 से घटकर 6 बचे हैं। पुलिस स्टेशन लगभग 330 थे अब 151 रह गए हैं और इनमें भी 41 नए बनाए गए पुलिस स्टेशन हैं। पिछले 6 साल में 336 सुरक्षा कैंप बनाए गए और नाइट लैंडिंग के लिए 68 हैलीपैड बनाए गए हैं। हमारे सीआरपीएफ के जवानों के लिए हमने 76 नाइट लैंडिंग हैलीपैड बनाए हैं। उन्होंने कहा कि नक्सलियों की आय़ कम करने के लिए एनआईए, ईडी और राज्य सरकारों ने करोड़ों रुपये की संपत्तियां ज़ब्त की हैं। गृह मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार के समन्वय के लिए भी उनके स्तर पर मुख्यमंत्रियों के साथ 12 बैठकें हुई हैं और अकेले छत्तीसगढ़ में 8 बैठकें हुई हैं।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि 2014-2024 के दौरान वामपंथी उग्रवाद प्रभावित राज्यों में 12 हज़ार किलोमीटर सड़कें बनी हैं, 17,500 सड़कों के लिए बजट स्वीकृत हुआ, 6300 करोड़ रुपये की लागत से 5000 मोबाइल टॉवर लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि 1060 बैंक शाखाएं खोली गई, 937 एटीएम लगाए गए, 37,850 बैंकिग कॉरेस्पॉडेंट्स बनाए गए, 5899 डाकघर खोले गए, 850 स्कूल और 186 अच्छे स्वास्थ्य केन्द खोले गए हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार नियद नेल्लानार योजना के तहत आयुष्मान भारत कार्ड, आधार कार्ड, वोटिंग कार्ड, स्कूल बनाना, राशन दुकान, आंगनवाड़ी स्वीकृत करने के काम में लगी है।

पूर्वोत्तर में 2004-2014 की तुलना में 2014-2024 में सुरक्षाकर्मियों की मृत्यु में 70 प्रतिशत की कमी

पूर्वोत्तर में उग्रवाद का जिक्र करते हुए श्री शाह ने कहा कि पूर्वोत्तर में 2004-2014 की तुलना में 2014-2024 में सुरक्षाकर्मियों की मृत्यु में 70 प्रतिशत की कमी आई है। इसी प्रकार, 2004-14 की तुलना में 2014-24 में नागरिकों की मृत्यु में 85 प्रतिशत की कमी आई है। मोदी सरकार ने 12 महत्वपूर्ण शांति समझौते कर हाथ में हथियार लेकर घूमने वाले 10,500 युवाओं को सरेंडर कर मेनस्ट्रीम में लाने का काम किया।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में 2019 में प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में धारा 370 को समाप्त कर दिया गया। उसके बाद सरकार ने सुनियोजित तरीके से विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी उन्मूलन से जनता का विश्वास अर्जित किया। उन्होंने कहा कि कश्मीर में पाक प्रायोजित आतंक के सामने बहुत सुनियोजित नीति के तहत मोदी सरकार ने काम किया। श्री शाह ने कहा कि 2004-14 में 7300 हिंसक घटनाओं के मुकाबले 2014-24 में 1800 हिंसक घटनाए हुई हैं। सुरक्षाकर्मियों की मृत्यु में 65 प्रतिशत और नागरिकों की मृत्यु में 77 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि देश का हर कानून आज वहां अमल में है। जम्मू-कश्मीर में आज़ादी के बाद पहली बार पंचायत चुनाव हुए और 99.8 प्रतिशत मतदान हुआ। श्री शाह ने कहा कि हम जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समस्या को धीरे-धीरे सुलझाने के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं। ■

मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना ने केंद्र सरकार के लखपति दीदी अभियान को और मजबूत किया है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 सितंबर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बिहार की मुख्यमंत्री महिला रोज़गार योजना का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने नवरात्रि के पावन अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने बिहार की महिलाओं के साथ इस उत्सव में शामिल होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आज मुख्यमंत्री महिला रोज़गार योजना का शुभारंभ हो रहा है। श्री मोदी ने बताया कि 75 लाख महिलाएं पहले ही इस पहल से जुड़ चुकी हैं। उन्होंने घोषणा की कि इन 75 लाख महिलाओं में से प्रत्येक के बैंक खातों में एक साथ 10,000 रुपये हस्तांतरित किए जा चुके हैं।

श्री मोदी ने कहा कि इस प्रक्रिया के दौरान उनके मन में दो विचार आए। पहला, उन्होंने कहा कि आज का दिन बिहार की महिलाओं और बेटियों के लिए सचमुच एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। जब कोई महिला रोज़गार या स्वरोज़गार से जुड़ती है, तो उसके सपनों को नए पंख लगते हैं और समाज में उसका सम्मान बढ़ता है। दूसरा, प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अगर सरकार ने ग्यारह साल पहले जन-धन योजना शुरू करने का संकल्प न लिया होता, अगर 30 करोड़ से ज़्यादा महिलाओं ने इस योजना के तहत बैंक खाते न खोले होते और अगर ये खाते मोबाइल फ़ोन और आधार से न जुड़े होते, तो आज इतनी धनराशि सीधे उनके बैंक खातों में स्थानांतरित करना संभव नहीं होता। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इस बुनियादी ढांचे के बिना धनराशि रास्ते में ही खो जाती, जिससे लाभार्थियों के साथ घोर अन्याय होता।

श्री मोदी ने बताया कि जब उन्हें पहली बार मुख्यमंत्री महिला रोज़गार योजना की परिकल्पना से परिचित कराया गया था, तब वे इससे बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस योजना के तहत प्रत्येक परिवार में कम से कम एक महिला लाभार्थी होगी। 10,000 रुपये की शुरुआती वित्तीय सहायता से शुरू होकर यह योजना उद्यम की सफलता के आधार पर 2 लाख रुपये तक प्रदान कर सकती है।

श्री मोदी ने कहा कि मुख्यमंत्री महिला रोज़गार योजना ने केंद्र सरकार के लखपति दीदी अभियान को और मज़बूत किया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने देश भर में 3 करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा है और 2 करोड़ से ज़्यादा महिलाएं इस उपलब्धि को हासिल कर चुकी हैं।

स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान

श्री मोदी ने नागरिकों, विशेषकर महिलाओं के स्वास्थ्य को सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता बताते हुए एक बड़ी पहल 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान' की शुरुआत की घोषणा की। इसकी शुरुआत 17 सितंबर, 2025 को विश्वकर्मा जयंती से हो चुकी है। इस अभियान के तहत गांवों और कस्बों में 4.25 लाख से ज़्यादा स्वास्थ्य शिविर लगाए जा रहे हैं।

यह देखते हुए कि त्योहारों का मौसम चल रहा है, नवरात्रि चल रही है, दिवाली नज़दीक है और छठ पूजा भी आने वाली है, श्री मोदी ने कहा कि महिलाएं इस दौरान घर के खर्चों को कैसे प्रबंधित और बचाया जाए, इस बारे में लगातार सोचती रहती हैं। इस चिंता को कम करने के लिए उनकी सरकार ने 22 सितंबर, 2025 से पूरे देश में जीएसटी दरों को कम करके एक बड़ा कदम उठाया है। इसके परिणामस्वरूप टूथपेस्ट, साबुन, शैम्पू, घी और खाने-पीने की चीज़ें जैसी रोज़मर्रा की ज़रूरत की चीज़ें अब कम दामों पर उपलब्ध होंगी।

यह रेखांकित करते हुए बिहार में जब भी महिलाओं को अवसर मिले हैं, उन्होंने अपने साहस और दृढ़ संकल्प से क्रांतिकारी बदलाव लाया है, प्रधानमंत्री ने कहा कि महिलाओं की प्रगति से समग्र समाज की प्रगति होती है।

इस कार्यक्रम में बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ■

देश को आत्मनिर्भर बनाकर के ही रहना है: नरेन्द्र मोदी

'वोकल फॉर लोकल' को खरीदारी का मंत्र बना दीजिए। ठान लीजिए, हमेशा के लिए, जो देश में तैयार हुआ है वही खरीदेंगे

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 सितंबर को मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 126वीं कड़ी की शुरुआत में कहा कि आज भारत की दो महान विभूतियों की जयंती है। मैं बात कर रहा हूं, शहीद भगत सिंह और लता दीदी की। अमर शहीद भगत सिंह, हर भारतवासी, विशेषकर देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज है। निर्भीकता उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। देश के लिए फांसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह जी ने अंग्रेजों को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूं कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें। इसलिए हमारी जान फांसी से नहीं, सीधा गोली मार कर ली जाए। यह उनके अदम्य साहस का प्रमाण है। भगत सिंह जी लोगों की पीड़ा के प्रति भी बहुत संवेदनशील थे और उनकी मदद में हमेशा आगे रहते थे। मैं शहीद भगत सिंह जी को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

देश के लिए फांसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह जी ने अंग्रेजों को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूं कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें। इसलिए हमारी जान फांसी से नहीं, सीधा गोली मार कर ली जाए। यह उनके अदम्य साहस का प्रमाण है

श्री मोदी ने कहा कि आज लता मंगेशकर की भी जयंती है। भारतीय संस्कृति और संगीत में रुचि रखने वाला कोई भी उनके गीतों को सुनकर अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। उनके गीतों में वो सब कुछ है जो मानवीय संवेदनाओं को झकझोरता है। उन्होंने देशभक्ति के जो गीत गाए, उन गीतों ने लोगों को बहुत प्रेरित किया। भारत की संस्कृति से भी उनका गहरा जुड़ाव था। मैं लता दीदी के लिए हृदय से अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं। लता दीदी जिन महान विभूतियों से प्रेरित थीं उनमें वीर सावरकर भी एक हैं, जिन्हें वो तात्या कहती थीं। उन्होंने वीर सावरकर जी के कई गीतों को भी अपने सुरों में पिरोया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि लता दीदी से मेरा स्नेह का जो बंधन था वो हमेशा कायम रहा। वो मुझे बिना भूले हर साल राखी भेजा करती थीं। मुझे याद है मराठी सुगम संगीत की महान हस्ती सुधीर फड़के जी ने सबसे पहले लता दीदी से मेरा परिचय कराया था और मैंने लता दीदी को कहा कि मुझे आपके द्वारा गाया और सुधीर जी द्वारा संगीतबद्ध गीत 'ज्योति कलश छलके' बहुत पसंद है।

भारत की संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं हमारे पर्व, त्योहार

श्री मोदी ने कहा कि हमारे पर्व, त्योहार भारत की संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं। छठ पूजा ऐसा एक पावन पर्व है जो दीवाली के बाद आता है। सूर्य देव को समर्पित यह महापर्व बहुत ही विशेष है। इसमें हम डूबते सूर्य को भी अर्घ्य देते हैं, उनकी आराधना करते हैं। छठ न सिर्फ देश के अलग–अलग हिस्सों में मनाई जाती है, बल्कि दुनिया भर में इसकी छटा देखने को मिलती है। आज ये एक वैश्विक उत्सव बन रहा है।

उन्होंने कहा कि मुझे आपको ये बताते हुए बहुत खुशी है कि भारत सरकार भी छठ पूजा को लेकर एक बड़े प्रयास में जुटी है। भारत सरकार छठ महापर्व को यूनेस्को की Intangible Cultural Heritage List यानी यूनेस्को की सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल कराने का प्रयास कर रही है। छठ पूजा जब यूनेस्को की सूची में शामिल होगी तो दुनिया के कोने-कोने में लोग इसकी भव्यता और दिव्यता का अनुभव कर पाएंगे।

श्री मोदी ने कहा कि कुछ समय पहले भारत सरकार के ऐसे ही प्रयासों से कोलकाता की दुर्गा पूजा भी यूनेस्को की इस सूची का हिस्सा बनी है। हम अपने सांस्कृतिक आयोजनों को ऐसे ही वैश्विक पहचान दिलाएंगे तो दुनिया भी उनके बारे में जानेगी, समझेगी, उनमें शामिल होने के लिए आगे आएगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि 2 अक्टूबर को गांधी जयंती है। गांधी जी ने हमेशा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया और इनमें खादी सबसे प्रमुख थी। दुर्भाग्य से आजादी के बाद खादी की रौनक कुछ फीकी पड़ती जा रही थी, लेकिन बीते 11 साल में खादी के प्रति देश के लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। पिछले कुछ वर्षों में खादी की बिक्री में बहुत तेजी देखी गई है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि

2 अक्टूबर को कोई ना कोई खादी का सामान जरूर खरीदें। गर्व से कहें— ये स्वदेशी हैं। इसे सोशल मीडिया पर #वोकल फॉर लोकल के साथ शेयर भी करें।

1925 में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना

श्री मोदी ने कहा कि अगले कुछ ही दिनों में हम विजयदशमी मनाने वाले हैं। इस बार विजयदशमी एक और वजह से बहुत विशेष है। इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष हो रहे हैं। एक शताब्दी की ये यात्रा जितनी अद्भुत है, अभूतपूर्व है, उतनी ही प्रेरक है। आज से 100 साल पहले जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी, तब देश सदियों से गुलामी की जंजीरों में बंधा था। सदियों की इस गुलामी ने हमारे स्वाभिमान और आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुंचाई थी। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता के सामने पहचान का संकट खड़ा किया जा रहा था। देशवासी हीन-भावना का शिकार होने लगे थे। इसलिए देश की आजादी के साथ-साथ ये भी महत्वपूर्ण था कि देश वैचारिक गुलामी से भी आजाद हो। ऐसे में परम पूज्य डॉ. हेडगेवार जी ने इस विषय में मंथन करना शुरू किया और फिर इसी भगीरथ कार्य के लिए उन्होंने 1925 में विजयदशमी के पावन अवसर पर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की।

उन्होंने कहा कि डॉक्टर साहब के जाने के बाद परम पूज्य गुरु जी ने राष्ट्र सेवा के इस महायज्ञ को आगे बढ़ाया। परम पूज्य गुरुजी कहा करते थे— "राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम" यानी, ये मेरा नहीं है, ये राष्ट्र का है। इसमें स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव रखने की प्रेरणा है। गुरुजी गोलवलकर जी के इस वाक्य ने लाखों स्वयंसेवकों को त्याग और सेवा की राह दिखाई है। त्याग और सेवा की भावना और अनुशासन की सीख यही संघ की सच्ची ताकत है।

परम पूज्य गुरुजी कहा करते थे— "राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम" यानी, ये मेरा नहीं है, ये राष्ट्र का है। इसमें स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव रखने की प्रेरणा है। गुरुजी गोलवरकर जी के इस वाक्य ने लाखों स्वयंसेवकों को त्याग और सेवा की राह दिखाई है

श्री मोदी ने कहा कि आज आरएसएस सौ वर्ष से बिना थके, बिना रुके, राष्ट्र सेवा के कार्य में लगा हुआ है। इसीलिए हम देखते हैं, देश में कहीं भी प्राकृतिक आपदा आए, आरएसएस के स्वयंसेवक सबसे पहले वहां पहुंच जाते हैं। लाखों लाख स्वयंसेवकों के जीवन के हर कर्म, हर प्रयास में राष्ट्र प्रथम (nation first) की यह भावना हमेशा सर्वोपरि रहती है। मैं राष्ट्रसेवा के महायज्ञ में स्वयं को समर्पित कर रहे प्रत्येक स्वयंसेवक को अपनी शुभकामनाएं अर्पित करता हूं।

भगवान राम ने सबको गले लगाया

प्रधानमंत्री ने कहा कि अगले महीने 7 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती है। हम सब जानते हैं, महर्षि वाल्मीकि भारतीय संस्कृति के कितने बड़े आधार हैं। ये महर्षि वाल्मीकि ही थे, जिन्होंने हमें भगवान राम की अवतार कथाओं से इतने विस्तार से परिचित करवाया था। उन्होंने मानवता को रामायण जैसा अद्भुत ग्रंथ दिया।

श्री मोदी ने कहा कि रामायण का ये प्रभाव उसमें समाहित भगवान राम के आदर्शों और मूल्यों के कारण है। भगवान राम ने सेवा, समरसता और करुणा से सबको गले लगाया था। इसीलिए हम देखते हैं, महर्षि वाल्मीकि की रामायण के राम, माता शबरी और निषादराज के साथ ही पूर्ण होते हैं। इसीलिए, अयोध्या में जब राम मंदिर का निर्माण हुआ, तो साथ में निषादराज और महर्षि वाल्मीकि का भी मंदिर बनाया गया है। मेरा आपसे आग्रह है, आप भी जब अयोध्या में रामलला के दर्शन करने जाएं, तो महर्षि वाल्मीकि और निषादराज मंदिर के दर्शन जरूर करें।

उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में एक के बाद एक त्योहार और खुशियां आने वाली हैं। हर पर्व पर हम खरीदारी भी खूब करते हैं और इस बार तो 'जीएसटी बचत उत्सव' भी चल रहा है। श्री मोदी ने कहा कि एक संकल्प लेकर आप अपने त्योहारों को और खास बना सकते हैं। अगर हम ठान लें कि इस बार त्योहार सिर्फ स्वदेशी चीजों से ही मनाएंगे, तो देखिएगा, हमारे उत्सव की रौनक कई गुना बढ़ जाएगी।

खरीदारी का मंत्र: 'वोकल फॉर लोकल'

प्रधानमंत्री ने कहा कि 'वोकल फॉर लोकल' को खरीदारी का मंत्र बना दीजिए। ठान लीजिए, हमेशा के लिए, जो देश में तैयार हुआ है वही खरीदेंगे। जिसे देश के लोगों ने बनाया है, वही घर ले जाएंगे। जिसमें देश के किसी नागरिक की मेहनत है, उसी सामान का उपयोग करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम सिर्फ कोई सामान नहीं खरीदते, हम किसी परिवार की उम्मीद घर लाते हैं, किसी कारीगर की मेहनत को सम्मान देते हैं, किसी युवा उद्यमी के सपनों को पंख देते हैं।

उन्होंने कहा कि त्योहारों पर हम सब अपने घर की सफाई में जुट जाते हैं, लेकिन स्वच्छता सिर्फ घर की चारदीवारी तक सीमित न रहे। गली, मोहल्ला, बाजार, गांव हर जगह पर सफाई हमारी जिम्मेदारी बने।

श्री मोदी ने कहा कि हमारे यहां ये पूरा समय उत्सवों का समय रहता है और दीवाली एक प्रकार से महा-उत्सव बन जाता है। मैं आप सबको आने वाली दीपावली की भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं लेकिन साथ-साथ फिर से दोहराऊंगा हमें आत्मनिर्भर बनना है, देश को आत्मनिर्भर बनाकर के ही रहना है और उसका रास्ता स्वदेशी से ही आगे बढ़ता है। ■

मुंबई (महाराष्ट्र) में 08 अक्टूबर, 2025 को नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे और मुंबई मेट्रो लाइन–3 के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

यशोभूमि (दिल्ली) में 8 अक्टूबर, 2025 को इंडिया मोबाइल कांग्रेस 2025 के उद्घाटन समारोह में भाग लेते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

झारसुगुड़ा (ओडिशा) में 27 सितंबर, 2025 को 50,000 करोड़ रुपये से अधिक के विकास कार्यों का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 सितंबर, 2025 को बिहार की मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना शुरू की और लाभार्थियों के साथ बातचीत की

दिल्ली में 02 अक्टूबर, 2025 को गांधी जयंती के अवसर पर राजघाट जाकर महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

दिल्ली में 02 अक्टूबर, 2025 को विजय घाट जाकर पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को उनकी जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

कमल संदेश
अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध
लॉग इन करें:
www.kamalsandesh.org
राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

@Kamal.Sandesh
@KamalSandesh
kamal.sandesh
KamalSandeshLive

डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
36 पृष्ठ कवर सहित
प्रकाशन तिथि: 18 अक्टूबर, 2025
आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953

सेवा का 25वां वर्ष

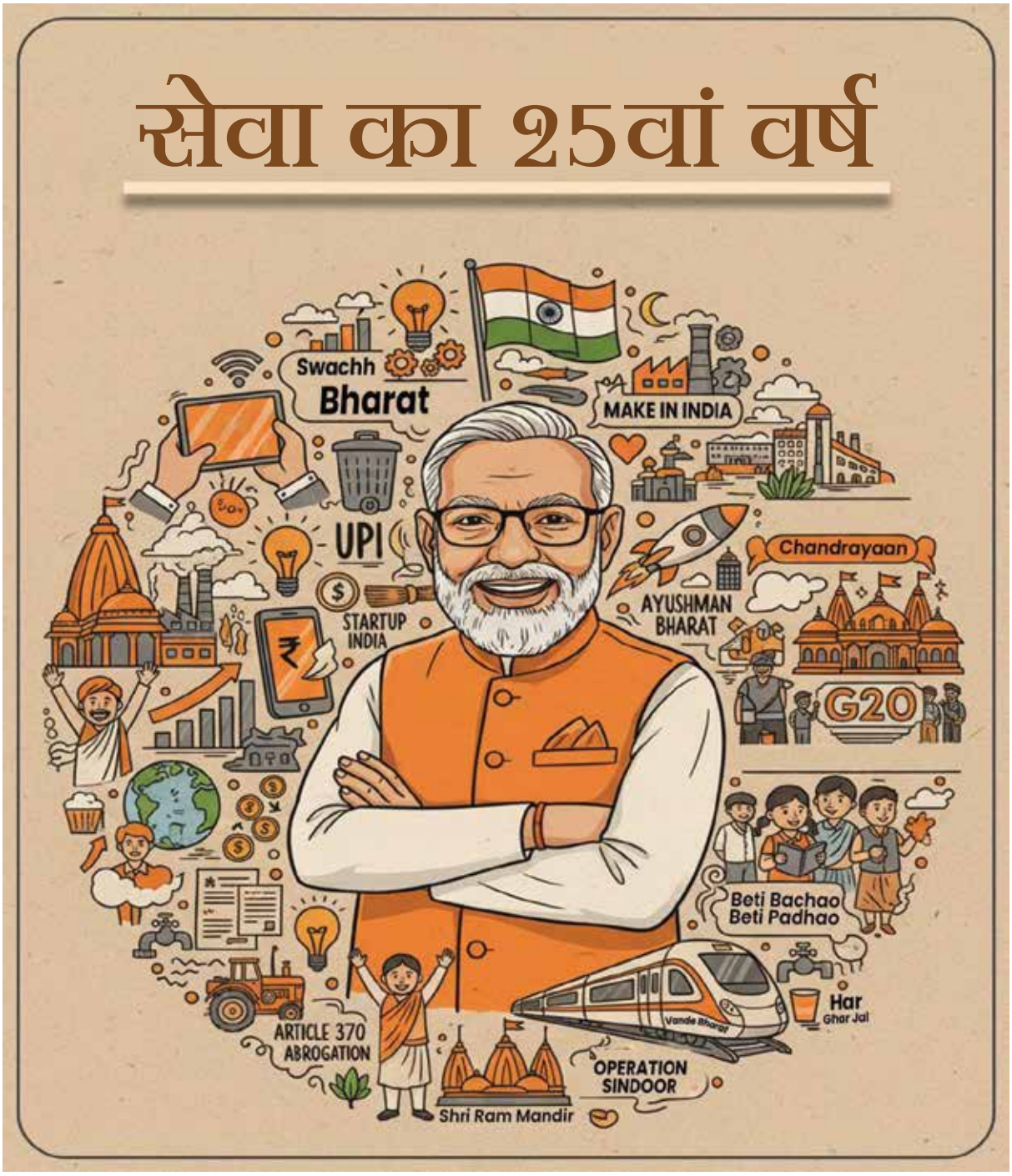

छायाकार: अजय कुमार सिंह